भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 16 | उदयपुर शुक्रवार 01 सितंबर 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

वृक्षों के सैंकड़ों उपयोग तो हजारों लाभ

– डॉ. भोलानाथ तिवारी –

सभी दृष्टियों से पेड़-पौधे हमारे लिए दोस्त भी हैं, रक्षक भी हैं, चिकित्सक भी हैं और धर्म और आस्था के एक प्रमुख आधार भी हैं। सोवियत संघ में एक अस्पताल खुला है जिसमें मात्र प्राकृतिक सुगंध से अनेकानेक रोगों का इलाज किया जा रहा है। इमली के नीचे सोने या उसकी लकड़ी पर खाना पकाने से कुष्ट रोग हो जाता है किन्तु नीम के पास रहना, उसकी लकड़ी का प्रयोग करना कुष्ट रोग को दूर कर देता है।

पेड़ों की पूजा विश्व में सभी देशों और प्रदेशों में किसी-न-किसी रूप में मिलती है। इसका प्रमुख कारण है पेड़ों का हमारे सुख-दु:ख का अनादि काल से साथी होना। जब मनुष्य को घर बनाना भी नहीं आया था तो भीषण गर्मी से वृक्ष ही उसकी रक्षा करता था। सर्दी में खुले स्थान पर सोने की तुलना में वृक्षों के नीचे सोना सर्दी से बचाता था और बरसात के दिनों में थोड़ी बहुत वर्षा से घने वृक्ष हमारी रक्षा भी करते थे।

यही नहीं, आगे चलकर खाना पकाने और सर्दी के अलाव के लिए पेड़ों से लकड़ी मिलती थी। पेड़ के पत्ते कभी पत्तल-दोने बनाने के काम आते थे। कभी घर छाने को कभी पुराने ढंग की जंगली छतरी बनाने के और कभी झोंपड़ी की दीवाल और छत बनाने के। खेती में हल-जुवाठ बनाने की लकड़ी हो या जोतने के बाद जमीन समतल करने का हेंगा-पटेला या सिंचाई करने के लिए हेकुल, इन सभी के लिए लकड़ी पेड़ से ही मिलती थी। और यही क्यों फूल भी मिलते थे और फल भी। स्वभावत: प्रारम्भिककाल में वृक्षों के प्रति ही आदर का भाव जगा, परिणामत: पूजा होने लगी। और आगे चलकर तो दवा के रूप में पेड़ों का उपयोग बढ़ गया।

कहना ना होगा कि आयुर्वेद की काष्ठ औषधियां हों या यूनानी, एलोपैथी, होमियोपैथी और प्राकृतिक इलाज सभी में पेड़-पौधों का उपयोग सर्वाधिक होता है। इस तरह सभी दृष्टियों से पेड़-पौधे हमारे लिए दोस्त भी हैं, रक्षक भी हैं, चिकित्सक भी हैं और यहां तक कि लोक-संस्कृति में धर्म और आस्था के एक प्रमुख आधार भी हैं।

पेड़-पौधों के विषय में जैसे-जैसे जानकारी बढ़ती गई, उनकी उपयोगिता हमारे सामने स्पष्ट होती गई। यहां तक कि हवा स्वस्थ करने, पर्यावरण को सन्तुलित रखने, वर्षा कराने, सूखा और अत्यधिक गर्मी को रोकने, रेगिस्तान को फैलने से रोकने आदि अनेक बातों के लिए पेड़ों की उपयोगिता का हमें पता चला। सौन्दर्य, प्राकृतिक सौन्दर्य तो उनमें है ही। पार्क में, सड़क के किनारे, पेड़ों की कतार रूप में, घरों के चारों ओर तथा भीतर, यहां तक कि बैठक में भी छोटे-बड़े पेड़-पौधें-फूलों को लगाकर हम अपने घर को जंगल का एक टुकड़ा बना कर संतोष का अनुभव करते हैं।

खुशबू से तो प्रधान स्त्रोत पेड़-पौधे रहे ही हैं। चन्दन दवा भी है, सुगंध का आकर्षक स्त्रोत भी। अनेकानेक लकड़ियां जैसे अंगार आदि से सुगंध प्राप्त होती है और फूल तो खुशबू के आदिस्त्रोत हैं ही।

इस तरह अनेकानेक लाभों ने अनादि काल से वृक्षों की ओर मनुष्य को आकर्षित किया। प्रारम्भिक संस्कृति और सभ्यता में उसका सहज परिणाम पूजा होना भी स्वाभाविक था किन्तु आगे चलकर कुछ और भी हुआ जिसने वृक्ष-सामीप्य और वृक्ष-पूजा को जैसे मनुष्य के लिए अनिवार्य बना दिया। मनुष्य का कुछ विकास हो जाने के बाद बुद्धिमान लोगों ने जब देखा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं तो अनेक ऐसे वृक्षों को धर्म से जोड़ दिया।

हिन्दुओं में तुलसी (हवा स्वच्छ करने तथा औषधीय गुणों के कारण), पीपल (हवा स्वच्छ करने तथा पत्ती-लकड़ी देने के कारण), अशोक (औषधीय गुणों तथा सौन्दर्य के कारण), नीम (कीटनाशकता तथा औषधीय गुणों के कारण), वट (छाया और लकड़ी के कारण), आंवला (औषधीय गुण के कारण), पंचवटी (हवा का संस्कार, लकड़ी, छाया के कारण), हरिशंकरी (पर्कटी, पीपल, वट), केला (औषधीय गुण, फल, पत्ते, रेशा के कारण) आदि का महत्त्व गुणों के कारण ही बढ़ा और अन्त में इन्हें हिन्दू धर्म से तरह-तरह से पौराणिक कथाओं से जोड़ दिया गया।

नीम के पास देवी का वास माना गया तो तुलसी विष्णु के परिवार की बना दी गई। बेल शंकर-तोषक मान लिया गया। कदम्ब कृष्ण का प्रिय कह दिया गया। इस तरह धार्मिक कारणों से हमने इन वृक्षों को अपना पड़ोसी बना लिया। हवा को गंदी करने वाली इमली घर के पास लगाना मना है। वैद्यक में आता है कि इमली के नीचे सोने या उसकी लकड़ी पर खाना पकाने से कुष्ट रोग हो जाता है किन्तु नीम के पास रहना, उसकी लकड़ी का प्रयोग करना कुष्ट रोग को दूर कर देता है।

जैन और बौद्ध साहित्य में भी रूक्ख-पूजा का माहात्म्य है। कहते हैं कि बुद्ध को तो वटवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसीलिए वट पूज्य और पवित्र है।

वाल्मीकि रामायण में पूजा वृक्षों को चैत्य कहा गया है। इनके तने के चारों ओर चबूतरे होते थे जिनके बगल में झण्डे फहराये होते थे। पथिक इनकी परिक्रमा तथा प्रणाम करते थे। मनु ने विद्यार्थियों के लिए भी पेड़ों की परिक्रमा करने का निर्देश किया है। स्कंधपुराण में ढाक, तुलसी, बेल, बरगद आदि पेड़ों की पूजा करने को कहा गया है।

विदा होती लड़की को वांदरमाल

– डॉ. कविता मेहता –

विवाह के पश्चात आने वाली प्रथम दीवाली पर लड़की को उसके पीहर की ओर से मुकलावा कराया जाता है। इसे मेवाड़ की ओर आणा कराना कहते हैं।

इसकी तैयारी बहुत पहले से शुरू कर दी जाती है। आणा लेने जंवाई अता है। वह अपने साथ नाई तथा सेवग लाता है जो उसकी हालटेल यानी सेवा में रहता है। जंवाई को अलग से निवास हेतु सजासजाया कक्ष दिया जाता है जहां उसके मनोरंजनार्थ उसके हम उम्र के साथी-समधी उसकी सुश्रुषा में बने रहते हैं। देखते-देखते यह प्रथा विलुप्त हो गई।

जंवाई के लिए रंग-ठंडाई और अच्छे खान-पान की व्यवस्था की जाती। ताश और अन्य खेल खेले जाते। जंवाई को दोनों समय नित नया जीमण कराया जाता। नये-नये पकवान-मिष्ठान्न बनाये जाते। जीमते वक्त औरतें गीत गातीं। जंवाई की साला हेलियां नानाप्रकार के कौतुक करतीं। महीने-महीने भर तक जंवाई को बड़े ठाठबाट से श्वसुरगृह रखा जाता। जंवाई खूब तातामाता होकर सजोड़े अपने घर लौटता।

विदाई के वक्त मुख्यत: लड़की के लिए गृहोपयोगी चीजें दी जातीं। इनमें से उसके पहनने के कांचली-कापड़े, साड़ियां, हवा करने की बीजणी, अटरम-सटरम चीजें रखने के लिए खुलेची, सजावटी मांगलिक रुई-कपड़े के बने मनोहारी हाथी, घोड़ा, ऊंट दिये जाते थे। इन सबमें सर्वाधिक आकर्षक वांदरमाल दी जाती। गृहिणियां स्वयं इन्हें तैयार करतीं।

वांदरमाल रंगबिरंगी कोथलियों से बनाई जाती। मुख्य रूप से यह दस कोथलियों वाली होती। चार, तीन, दो और एक के क्रम में ऊपर से लेकर नीचे तक कोथलियां आपस में लड़ी बनाती जोड़ी जाती। ऊपर ही ऊपर एक लम्बा पट्टा होता फिर उससे कोथलियां जोड़ी जातीं। यह पट्टा अस्तर लिए होता। नीचे का अस्तर सफेद महीन कपड़े का होता। कोथलियां करीब एक बेंत की होतीं। इन्हें खूबसूरती देने के लिए किनारे पर फूंदे, ऊपर छोटे-छोटे कपड़े-रुई के बने मिठू (तोते) लगाये जाते। सिंघाड़े, चमरे निकाले जाते। रंगबिरंगी कोथलियों के रंगबिरंगी मगजी तथा रुपहरी-सुनहरी पतली कौर लगाई जाती। ऐसी ही पट्टी सजाई जाती। विविध रंगी मोती, लालें तथा चीड़ें लगाई जातीं।

यह वांदरमाल घर की मुख्य दीवाल या फिर पानी रखने के स्थान परींडे पर लगाई जाती। कोथलियों में छोटी-मोटी काच-कांगसी, सुई-डोरा, गूंदी-बटन जैसी चीजें रखी जातीं। देखते-देखते नई हवा-रोशनी के कारण ऐसी शानदार परम्पराएं जैसे हमारे जीवन से ही रेत की तरह फिसल हवा हो गईं। वांदरमाल के साथ वह बधावा गीत भी गाया जाता जो हमें शुभ शकुन देता और घर में मंगल-मांगल्य बनाये रखता-

मोत्यां रा लूमक झूमका
कसतूरी ओ राजा वांदरमाल
बधावो जी म्हारे आवियो।

बदलते समय में बदलाव हो पर जो चीजें सकारात्मक और शकुनी होती हैं उनका संरक्षण करते यदि हम अपनी संस्कृति को लुप्त होने से बचा सकें तो समय हमारा गुणानुवाद करेगा।

पोथीखाना

'हिन्दी जगत' से डॉ. धर्मवीर भारती की स्मृतियां जीवंत हुई

हिन्दी जगत के अप्रेल-जून 2023 के अंक में प्रकाशित हरीश पाठक के डॉ. धर्मवीर भारती : शब्द-शब्द इतिहास आलेख ने मेरी अनेक स्मृतियों को उजागर कर दिया। सन् 1984 में जब भारतीजी महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त पत्रकारिता का हल्दीघाटी पुरस्कार लेने उदयपुर आये तब उनके साथ पुष्पाजी भी थीं। इस समारोह में मुझे भी फाउण्डेशन के संस्थापक भगवतसिंह मेवाड़ द्वारा महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रदान किया गया था।

दूसरे दिन मैं भारतीजी को हल्दीघाटी ले गया था। शाहीबाग से जब हम हल्दीघाटी रणस्थल पहुंचे तो भारतीजी बोले, 'भानावतजी, यहां मुझे अजीब तरह का रोमांच हो रहा है।' मैंने कहा, 'यह रक्त तलाई है। यही असली युद्धस्थल है।' यह सुनते ही भारतीजी ने अपने चप्पल खोल उस भूमि को दण्डवत किया और वहां की माटी लेकर एक पुड़िया बनाई। बम्बई जाकर मुझे लिखा कि जिस हल्दीघाटी की माटी को मैं अपने साथ लाया, अपने पूजास्थल में सरस्वती के साथ उसकी भी पूजा कर रहा हूं।

बीच रास्ते में धर्मयुग को लेकर बहुत सी बातें हुईं। उन्होंने कहा कि 'धर्मयुग' घाटे में निकल रहा है किन्तु उसके होली, दीवाली तथा क्रिकेट विशेषांक बड़ी सजधज के साथ निकालते हैं। इनमें प्रकाशित विज्ञापनों के जरिये पूरे वर्ष का घाटा पूरा कर लेते हैं।

मैं 'धर्मयुग' में सर्वाधिक छपा। इस कारण सर्वाधिक चर्चित भी हुआ। हरीशजी ने ठीक लिखा यदि 'धर्मयुग' और 'डॉ. धर्मवीर भारती' एक-दूसरे के पर्याय बने तो इसका सबसे बड़ा कारण भारतीजी की कड़ी और रात-रात की जाने वाली वह मेहनत थी जो वे उम्र के अन्तिम छोर तक करते रहे। उनके इस बेदाग समर्पण ने 'धर्मयुग' को तो शिखर पर पहुंचाया ही, उससे जुड़े उन लोगों को भी यश की दहलीज पर खड़ा कर दिया जो 'धर्मयुग' से जुड़े थे। (पृ. 25)

हल्दीघाटी के बीच रास्ते में भारतीजी ने मेरे आलेखों के बारे में भी कहा कि प्रारम्भ में जो लेख आया उसे वे पढ़कर बहुत मुग्ध हुए पर छापने के लिए कईबार सोचते रहे। सुबह जब दफ्तर आते, उसे साथ लाते और शाम को लौटते वक्त घर ले जा तकिये के नीचे रख देते। बोले, इस उधेड़बुन में रहता कि छपने पर पाठकों की क्या प्रतिक्रिया रहेगी। कहीं ऐसा न हो कि इससे अंधविश्वास को बढ़ावा मिले।

ऐसा करते उन्होंने मेरा एक बड़ा लेख 'मरदांवाली मूठ, लूट सके तो लूट' छापा। इस पर इतनी अधिक प्रतिक्रियाएं आईं जितनी पहले कभी किसी रचना की नहीं आई थीं। चित्तौड़ के किले पर लगने वाला भूतों का मेला तथा बैकुण्ठ चतुर्दशी का दिव्य आत्माओं का मेला, दीवाली तथा गैरों का रेला छड़ियों का मेला एवं सींग वाले शेर लेख होली विशेषांकों में ही छापे थे। उड़ाकर लाया जाने वाला भूतमहल, महाराणी की शिकार कथा, गणगौर एवं पड़ मुख से बोलेगी, गाथा सब खोलेगी, सांप सीढ़ी का खेल जैसे सचित्र लेख भी मेरे बहुचर्चित बने। मेहंदी पर तो उन्होंने एक लेख और मंगवाया जिसे विभिन्न चित्रों सहित 'जग लाली रहे जैसे रंग मेहंदी' शीर्षक से छापा जो मैंने कई लोगों के घरों की दीवारों पर फ्रेम में टंगा पाया।

सच तो यह है कि भारतीजी ने जहां पत्रकारिता के क्षेत्र में साप्ताहिक 'धर्मयुग' को अपने युग का धर्मयुग ही बना दिया वहीं सम्पादक के रूप में वे अपने समय के सच्चे, खरे, निडर, साहसी और खोजकदृष्टि सम्पन्न इतिहास पुरुष ही बन गये। धर्मयुग और भारतीजी से अति घनिष्ट अन्तरंगता से जुड़े बिना ऐसा लेख सर्वथा असंभव था एतदर्थ हरीशजी को लिखने और हिन्दी जगत को उसे प्रकाशित करने के लिए बहुत-बहुत बधाई।

इसी क्रम में बंगाली के प्रख्यात लेखक विमल मित्र पर आलेख बड़े महत्त्वपूर्ण हैं जो हिन्दी के लोकप्रिय लेखक डॉ. धर्मवीर भारती तथा डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र द्वारा लिखे गये हैं। धर्मवीर भारती सदैव ही अपनी सधी हुई लेखनी से गम्भीर रचनाएं लिखने के लिए जाने जाते हैं। भारतीजी का लिखा 'समय गंध के कथा पुरुष : विमल मित्र' शीर्षक लेख उनके अन्तरंग आत्मीय मिलन का मर्मस्पर्शी वर्णन लिये है जो सहज ही पाठकों के मर्म को छूता है।

इसमें विमलदा से उनकी जो बीतचीत हुई वह शायद पहलीबार पाठकों को सुलभ हो रही है। इसं संस्मरण में महत्त्वपूर्ण बात यह रही जिसके लिए भारतीजी लिखते हैं- उनका मानना था कि हिन्दी का काम और हिन्दी की सेवा बहुत बड़ी देश सेवा है। उन्होंने यह कामना की कि 'यदि अगला जन्म हुआ तो मैं चाहूंगा कि मेरा जन्म भारत के किसी हिन्दी भाषी क्षेत्र में हो।' (पृ. 7)

विमलदा के प्रसिद्ध उपन्यास 'साहब बीबी गुलाम' के जिक्र में विमलदा का यह कथन भी कम उल्लेखनीय नहीं है जिसमें वे कहते हैं- 'जब साहब बीबी गुलाम लिखा सबने मेरी निन्दा की। लानतें भेजीं। इतनी निन्दा हुई कि मैंने पत्नी से अनुमति लेकर नौकरी छोड़ दी और तब कलकत्ते के 300 साल की कथा लिखने का प्लान किया।'

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने विमलदा के हिन्दी के प्रति आत्मीय लगाव को बड़ी आत्मीयता से वर्णित किया है। विमलदा कहते हैं- 'मेरा लेखन उन भाषाओं के पाठकों तक जा रहा है जिन भाषाओं को मैं जानता तक नहीं। मैं लिखता तो बंगला में हूं लेकिन मेरा धोती-कुर्ता, भोजन-भात सब हिन्दी देती है। हिन्दी के पाठकों के प्यार ने मुझे हमेशा लिखने के लिए प्रेरित किया।' (पृ. 11)

विलदा लिखित उपन्यास 'साहब बीबी गुलाम' पर गुरुदत्त ने फिल्म बनाई। उस पर लिखा मुन्नी गंधर्व का आलेख उपन्यास को फिर से पढ़ने और फिल्म देखने की प्रेरणा देता है।

अन्त में अपने सम्पादकीय में प्रो. ऋतुपर्ण की आज की शिक्षा पर यह टिप्पणी आधुनिक अर्थहीन शिक्षा पर न केवल जोरदार तमाचा है अपितु कई सवाल भी खड़े करती है। वे लिखते हैं- 'डिग्रियां किसी की विद्वता का पैमाना नहीं हो सकतीं। यह सब नौकरी देने या न देने के बहाने हैं। हमारे देश का दुर्भाग्य यही है कि प्रतिभा को सम्मान नहीं मिलता। डिग्रीधारक प्रतिभाहीन व्यक्तियों की पूजा हो रही है।' (पृ. 3)

विश्व हिन्दी न्यास के इस त्रैमासिक पत्र में भारत के अलावा विदेश में रह रहे रचनाकारों की रचनाएं भी पढ़ने को मिल जाती हैं। **- म. भा.**

क्रान्तिकारी बारहठ परिवार

-डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित-

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राजस्थान की देशी रियासतों में समाचारपत्रों एवं साहित्य के माध्यम से ब्रिटिश सरकार की कार्यशैली का खुले रूप में विरोध शुरू होकर राष्ट्रीय चेतना का जागरण प्रारम्भ हो चुका था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ के माध्यम से भारत में स्वदेशी स्वराज्य की भावना का प्रचार-प्रसार किया। उत्तरी भारत में सशस्त्र क्रान्ति के उद्देश्य से लाला हरदयाल, रसबिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि क्रान्तिकारियों के नेतृत्व में 'अभिनव भारत' नामक संस्था के विचारों व कार्यों का प्रचार किया जा रहा था। इन क्रान्तिकारियों का राजस्थान के क्रान्तिवीर सुवाओं से निकट का सम्बन्ध था।

राजपूताने में ठाकुर केसरीसिंह बारहठ, खरवा के राव गोपालसिंह और अर्जुनलाल सेठी 'अभिनव भारत' की उपशाखा के प्रमुख सूत्रधार थे। क्रान्तिकारी गतिविधियों में व्यापक रूप से राजपूताने के नरेशों, सामन्तों और नवयुवकों को शामिल करने के उद्देश्य से बारहठ केसरीसिंह ने 1910 ई. में 'वीर भारत सभा' (अभिनव भारत की शाखा) का गठन किया। बारहठजी इस सभा के माध्यम से सशस्त्र क्रान्ति का शुभारम्भ करना चाहते थे। ब्रिटिश दबाव के चलते उन्हें अपना पैतृक नगर शाहपुरा छोड़कर कोटा राज्य में सपरिवार जाना पड़ा तदनुसार समूचा परिवार राष्ट्र को समर्पित हो गया।

केसरीसिंह के अनुज जोरावरसिंह, पुत्र प्रतापसिंह तथा जामाता ईश्वरदान भी क्रान्तिकारियों की सूची में सम्मिलित हो गये। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस ने कहा था, 'ऐसे उदाहरण तो हैं कि पिता ने पुत्र को देश की बलिवेदी पर चढ़ने को भेज दिया, परन्तु यह पहला उदाहरण है, जिसने अपने पुत्र के साथ जामाता ईश्वरदान को भी आगे कर दिया।'

ठाकुर केसरीसिंह बारहठ का जन्म तत्कालीन शाहपुरा रियासत के देवपुरा ग्राम में 21 नवम्बर 1872 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम कृष्णसिंह था जो उदयपुर राज्य के मंत्री थे। केसरीसिंह पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों का प्रभाव पड़ा फिर उनका सम्पर्क अजमेर में श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुआ, जो क्रान्तिकारी विचारों के थे। बारहठजी संस्कृत, वेदान्त, इतिहास एवं राजनीति विषयों के उद्भट्ट विद्वान थे। डिंगल तथा खड़ी बोली में वे श्रेष्ठ काव्य की रचना किया करते थे। महाराणा सज्जनसिंह ने उनकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर उन्हें कई ग्राम जागीर में दिये। बारहठजी ने कोटा में क्रान्तिकारी दल की स्थापना की जिसमें डॉ. गुरुदत्त, लक्ष्मीनारायण और हीरालाल लाहिड़ी प्रमुख थे।

सशस्त्र क्रान्ति को सफल बनाने के लिए धन की प्रमुख आवश्यकता थी, तदनुसार जोधपुर के एक धनी साधु प्यारेलाल को बद्रीनारायण यात्रा के बहाने कोटा ले गया और 25 जून 1912 ई. को उसकी हत्या कर दी गई। पुलिस इस सम्बन्ध में किसी भी क्रान्तिकारी को न पकड़ सकी किन्तु रामकरण द्वारा केसरीसिंह को गुप्त भाषा में लिखा पत्र पुलिस का हाथ लग गया। तदनुसार केसरीसिंह बारहठ, हीरालाल लाहिड़ी, रामकरण और हीरालाल जालौरी बन्दी बना लिये गये तथा उन पर मुकदमा चलाया गया।

केसरीसिंह, हीरालाल लाहिड़ी और रामकरण को 20-20 वर्षों के कारावास की सजा सुनाई गई। बारहठजी को हजारीबाग जेल (बिहार) में रखा गया। उन्हें अत्यधिक यातनाएं दी गईं। उनकी पत्नी और बच्चों की स्थिति दयनीय थी। ब्रिटिश दबाव में आकर शाहपुरा शासक ने उनकी जागीर व अचल सम्पत्ति कुर्क कर ली। जेल अधीक्षक मीक ने बारहठजी की प्रतिभा से प्रभावित होकर उनसे अपनी पत्नी को संस्कृत भाषा सिखवायी। बारहठजी को कोटा लाया गया।

केसरीसिंह बारहठ | जोरावरसिंह बारहठ | प्रतापसिंह बारहठ

कलान्तर में मीक ने सहयोग कर 1919 ई. में अन्य राजनैतिक बन्दियों के साथ बारहठजी को रिहा करवा दिया। केसरीसिंह के पुत्र प्रतापसिंह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी था जिसे एक मुखबीर की सूचना पर आशानाड़ा जोधपुर स्टेशन पर गिरफ्तार कर बरेली जेल भेज दिया गया। वहां पुलिस की घोर यातनाओं के मध्य उस युवा का निधन हो गया। उनके अनुज जोरावरसिंह बारहठ 1912 ई. में दिल्ली में लॉर्ड हार्डिंग पर बम फैंकने वाले दल का प्रमुख था वह आजीवन पुलिस की गिरफ्त नहीं आया। 37 वर्षों के अज्ञातवास के बाद उसकी मृत्यु हुई। बारहठजी के शैक्षिक गुरु स्वयं उनके पिता कृष्णसिंह एवं कविराजा श्यामलदास थे। उनके काव्य संग्रह में 'चेतावनी रा चूंरट्या' एक सुप्रसिद्ध एवं चर्चित रचना है। राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले क्रान्तिकारियों में ठाकुर केसरीसिंह बारहठ का नाम सदैव अग्रणी रहेगा। अस्वस्थता के चलते 14 अगस्त 1941 ई. को उनका निधन हो गया।

स्मृतियों के शिखर (170) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जीवजगत के प्रमुख आश्रय हैं जन और वन

वृक्ष मानव की जीवन रेखा है। मानव के सारे संकटों की सुरक्षा का दायित्व वृक्ष से जुड़ा है। वे वृक्ष ही हैं जो पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखते हैं। यही कारण है कि मनुष्य अपने प्रारंभिक काल से ही पर्यावरण से अपना अन्योन्याश्रित संबंध जोड़े हुए है। इसीलिए जन और वन जीवजगत के दो सबसे प्रमुख आश्रय-आश्रम हैं। इनमें से जब एक भी गड़बड़ाता है तो दूसरे पर संकट आ पड़ता है और दोनों का जीवन डगमगाता लगता है। दोनों मिलकर सृष्टि के सौंदर्य को परिपूरित करते हैं।

इनमें मनुष्य का महत्त्व बढ़कर बताया गया है। संसार में चौरासी लाख की जीव योनियों में मनुष्य योनि सबसे बढ़चढ़कर कही गई है। लोकमान्यताओं और शास्त्रों में वर्णित संदर्भों में भी मनुष्य योनि ही सर्वोत्तम पायदान पर स्वीकारी गई है। यहां तक कि देव योनि भी मानव योनि को ही महत्त्व देती आई है। धरती पर आने के लिए, मनुष्य लोक में विचरण करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। वह मनुष्य ही है जिसमें समग्र योनियों को जानने, अभिव्यक्त करने तथा उसके रहस्यों को खोजने-खोलने की क्षमता मिली हुई है। धरती पर मनुष्य ने अपने बुद्धि-चातुर्य, ज्ञान-संपदा तथा पौरूष के रहते सदैव ही नया कुछ करने की बलवती जिज्ञासा रखी इसीलिए उसकी नवीनतम खोजों ने विश्व को सदैव ही नव नवोन्मेष देते रहने की ऊर्जा दी है। प्रकृति के श्रेष्ठतम कवि सुमित्रानंदन पंत ने 'मानव तुम सबसे सुंदरतम' कह कर मनुष्य को सबसे श्रेष्ठतम सौंदर्यजीवी उपासक कहते उसकी अभ्यर्थना की।

ऐसे अनेक स्थल हैं जब जहां-जहां मनुष्यों का जुड़ाव होता है वहां-वहां उनका बाना धारण कर देवता उनके बीच, उनके साथ धरती पर, मृत्युलोक में आकर अपनी लीला, कौतुक तथा करिश्माई करतब कर सबको आश्चर्य में डाल देते हैं। कुंभ, अर्धकुंभ जैसे मेलों के अलावा विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों, आदिवासियों एवं जनजातियों से जुड़े धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आयोजनों में ऐसे दृश्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में हमारे दृष्टि-बिंब याकि अनुभूतिपूरक हिस्से बनते हैं।

वृक्ष देवता हैं। हमारी जीवनशक्ति हैं। हमारी संस्कृति के रखवाले हैं। हमारी सभ्यता के सुमेरु हैं। हमारे संस्कारों के बहीवाचक हैं। हमारे वंशजों के पुरखे हैं। धरती पर हम इन्हें बड़ी आजीजी कर, मनौती मनुहार कर लाये हैं। इसीलिए जब-जब इन पर संकट छाया, मनुष्य ने इनकी हर प्रकारेण रक्षा की और अन्ततोगत्वा अपना उत्सर्ग तक कर दिया।

आदिवासी समाज में कंठासीन 'रूंख पुराण' में कथा-कथन मिलता है जिसमें देवी अम्बाव अनेक मुसीबतें पार कर सातवें पाताल से राजा वासक की बाड़ी से बड़ी मनौती से बड़ल्या लाकर मृत्युलोक में हींदवा नामक स्थान पर स्थापित करती है। भारत नाम से यह रूंख गाथा भीली नृत्य गवरी के प्रारंभ में सृष्टि के मूल रचाव को अभिव्यक्त करती है।

यह वट वृक्ष, बड़-बड़ल्या बारह बीघे का फैलाव लिये था। थाली जितने बड़े पत्ते तथा सुनहरी कोंपलों वाला यह वृक्ष एक चट्टान पर स्थिर किया और दूध-दही से सींचा गया। यह वृक्ष अकेला नहीं, इसके साथ अन्य वृक्षों तथा फूलजनित पौधों को भी लाया गया। गवरी नृत्य के प्रथम शोध-अध्येता के रूप में मैंने बड़े विस्तार से इस पर लिखा है।

राजस्थान में वृक्षों की सर्वाधिक महिमा है। यहां हर वृक्ष-वल्लरी में भगवान का निवास है। अनेक पर्वोत्सवों पर वृक्ष पूजा का माहात्म्य है। वृक्षों की पूजा-परिक्रमा की जाकर सुखी-समृद्ध जीवन की कामना की जाती है। वृक्ष को किसी तरह की हानि पहुंचाने को अपराध समझ प्रायश्चित किया जाता है। पत्ता और डाली भी तोड़ी जाती है तो पहले उसे नमन कर मौन स्वीकृति ली जाती है। ऊंगली की सहायता से बड़े अदब से डाल-पात पाया जाता है यहां तक कि छाल तक हल्के नाखून से उतारी जाती है।

वृक्ष हमारी संजीवनी हैं। इनसे हमें शुद्ध हवा-पानी, फल-फूल, रोटी-रूजक तथा सहारा-आसरा मिलता है। मुश्किल वक्त में वृक्ष बड़े सहायक तथा संबल प्रदाता होते हैं पर इन पर डागले, घर, मचान और मकान मनुष्य को अनेक खतरों से बचाते हैं। पंछियों के आश्रय स्थल तो

अनेक वृक्ष ऐसे हैं जिन पर असंख्यक पक्षी रात्रि विश्राम के लिए डेरा डालते हैं और प्रात: होते-होते लम्बी छलांग भरते हैं।

नदी, सरोवर, ताल, तलैया, कुए, बावड़ी, कुंड, झील, तलाब, सागर, सर सब वृक्ष बिन सूने तथा श्रीहीन लगते हैं। घर-आंगन की शोभा तक वृक्ष-वल्लरी रहे हैं। अनेक गीत, कथा, किस्से, कहावत, मुहावरे वृक्षवाची हैं जिनसे इनकी उपयोगिता, उपस्थिति, उपकार, उपहार जुड़े हैं। बाग-बगीचों से जुड़े अनेक घटना-प्रसंग, आख्यान तथा आनंद विहार ने मनुष्य को मौजी, मस्तजीवी एवं महनीय माननीय बनाया है। पुराणों में, प्राचीन ग्रंथों में वृक्ष वर्णन भरे पड़े हैं।

वृक्षों के ऐसे अनेक दरसाव तथा दस्तावेज भरे पड़े हैं। मैंने अपनी कविता-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' में लिखा- 'वृक्ष कटता है जैसे परिवार कटता है। अपनी ऊंगली तो काट कर देखो तुम / कितनों का सहारा होता है वृक्ष / कितनों का घरबार जीवन और संसार होता है वृक्ष! तुम्हें क्या मालूम।'

वह धरती राजस्थान की ही है जहां वृक्ष को बचाने के लिए यहां के वीर और वीरांगनाओं ने अपने प्राणों का उत्सर्ग तक कर दिया। इस अद्वितीय, अनूठी तथा अतुलनीय परंपरा को यहां खड़ाना कहा गया। दूसरे शब्दों में इसे साका नाम से भी जाना गया। 'सिर साटै जै रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' जैसा तो यहां आमजन का कथन ही बना हुआ है।

वृक्ष बचाने के लिए अपने प्राणोत्सर्ग करने की घटनाओं का साक्षी जोधपुर जिला रहा। इसमें नारियों ने अग्रणी रहकर मुख्य भूमिका निभाई। पहली घटना जोधपुर जिले के रामासड़ी गांव की, संवत् 1661 की है। यहां करमा एवं गौरा नामक दो विश्नोई महिलाओं ने खेजड़ी वृक्ष को बचाने स्वेच्छा से अपना बलिदान किया।

दूसरी घटना मेड़ता परगने के पोलावास गांव की संवत् 1700 की चैत्र वदी तीज की है जब राजोद गांव के ठाकुरों द्वारा होली मंगलाने के लिए वृक्ष काटने के विरोध स्वरूप बूचोजी ने तलवार से अपनी गर्दन कटवादी। तीसरी खेजड़ली गांव में भाद्र शुक्ला दशमीं संवत् 1787 में घटी जो विश्वविख्यात है।

इसमें खेजड़ी के बचाव में सर्वप्रथम अमृतादेवी ने अपनी बलि दी। उसका अनुसरण करते फिर उस गांव के 363 व्यक्तियों ने प्राणोत्सर्ग किया। एक और घटना भी इसी जोधपुर जिले के तिलासणी गांव की है जहां किरपों भाटी द्वारा वृक्ष काटने के विरोध में खींवजी, मोटा एवं नेतू नैण ने प्राण की बाजी लगादी। ऐसी अनूठी घटनाएं राजस्थान में ही हुई हैं। इस परंपरा को खड़ाना अथवा साका कहा जाता है।

राजस्थान का सर्वाधिक शुष्क जिला जैसलमेर है जहां वर्षा का वार्षिक औसत ही पांच सेंटीमीटर है। यहां दूर-दूर जहां तक दृष्टि जाती है, रेगिस्तान फैला हुआ है। वहां खेतों में जमा पानी रोकने खड़ीन तथा घरों में टांके बनाये जाते हैं। ऐसे शुष्क इलाके में जीवनयापन की मुश्किल कल्पना सहज ही की जा सकती है परन्तु प्रकृति की लीला ही कहिये यहीं पाये जाने वाले ऊंट को राज्य पशु, खेजड़ी को राज्य रूंख, रोहिड़ा को राज्य पुष्प तथा गोडावण को राज्य पक्षी होने का गौरव प्राप्त है।

आदिवासियों में महुए के पेड़ की तरह रेगिस्तान में खेजड़ी वृक्ष कई दृष्टियों से बड़ा उपयोगी है। जाळ पर लगे पीलू नामक फल लू से बचाये रखते हैं। इनके अलावा झरबेरी (बोरड़ी), कंकाड़ी, बबूल, कुमट, कैर जैसे पेड़ ; आक, खींप, सणिया, बूर, नागफणी, थोर जैसी झाड़ियां ; सेवण, धामन, मोथा, तूंबा, गोखरू, सांटी, दूब जैसी घासें वहां के जीव-जगत के लालन-पालन, दु:खदर्द तथा रोजगार सुलभ कराने में अहम भूमिका लिये है।

सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्ष यह है कि शासन की ओर से प्रजाहितार्थ ऐसी भूमि छोड़ रखी है जिसमें किसी भी तरह के वृक्ष-वनस्पति को काटने अथवा हानि पहुंचाने की सख्त पाबन्दी है। ऐसी भूमि ओरण कहलाती है जो वहां के मन्दिर से जुड़ी होती है।

यहां ऐसे अनेक गांव मिलेंगे जहां माताजी, भैरूजी, भोमियाजी, बायांजी तथा अन्य देवी-देवताओं के नाम से ओरण भूमि आरक्षित-संरक्षित करने का प्रावधान है। इस भूमि से किसी भी पेड़ तथा वनस्पति, फल-फूल तोड़ने को महापाप समझा जाता है। ऐसे ओरण कच्चे पत्थरों, कांटों के पौधों या फिर सूखी कांटेदार झाड़ियों, थूहरों आदि से बाड़ के रूप में चारदीवारी से सुरक्षित कर दिये जाते हैं। इसकी सार संभाल करना पवित्र धार्मिक कर्तव्य तथा पुण्य का भागी होना माना जाता है। अनेक ऐसे वृक्ष मिलेंगे जिनके तनों के ऊपरी छिलके उतार सिन्दूर मालीपन्ना की सहायता से देवी-देवता का प्रतीक चिन्ह बनाकर उनका बचाव किया जाता है।

ऐसी ही ओरण भूमि बीकानेर जिले के देशनोक की विश्वप्रसिद्ध लोकदेवी करणीमाता के बारह कोस, लगभग 36 किलोमीटर की परिक्रमा में नेहड़ीजी के मन्दिर से जुड़ी है। नेहड़ीजी के इस मन्दिर में तो प्रतिदिन ही खेजड़ी वृक्ष की आरती की जाती है। इस क्षेत्र में कभी कोई महामारी तो क्या फ्लेग तक नहीं हुआ। करणीमाता तो चूहोंवाली देवी के नाम से ही जानी जाती है। मन्दिर में प्रवेश करते ही पग-पग पर इतने चूहे मिलेंगे कि संभल-संभल कर दर्शनार्थ जाना पड़ता है फिर फ्लेग का प्रकोप चूहों से ही जुड़ा होने पर भी यहां कभी वह दुर्दिन नहीं देखा गया।

ओरण भूमि दरअसल वनभूमि ही है। विभिन्न अंचलों में वहां मान्य देवी-देवताओं के नाम ऐसी भूमि जगह-जगह मिलेगी। सर्वाधिक रूप में पाबूजी, रामदेवजी, तेजाजी, गोगाजी तथा झरड़ाजी, आईनाथजी, भोमियाजी के नाम से रक्षित ओरण का तो तिनका तक नहीं तोड़ा जाता। इसी प्रकार गायों के चरने की तथा भूमि के रक्षार्थ शहीद हुए लोगों के नाम पर ओरण संरक्षित करने के किस्से भी सुनने को मिलते हैं।

गांवों के चारों और की गोचर भूमि गायों के बैठने सुस्ताने की होती जो खैड़ा कहलाती। कुओं, तालाबों के पास की तांडा तथा पानी आवक का क्षेत्र अगोरो के नाम से जाना जाता। ये स्थल सुरक्षित रहते। इनको कोई गंदा नहीं करता। बाल-बच्चों के खेलने-कूदने तथा बुजुर्गों के बैठने, गपशप लड़ाने के लिए खुला स्थान बाखळ होता जिसे कहीं बंतळ तो कहीं हथाई कहते। वृक्षों की रक्षा के लिए छोटे-बड़े सब जिम्मेदार होते। रियासत काल में राजा, दीवान, सेठ, साहूकार तथा अन्य बड़े भी कोई गल्ती कर देते तो वे भी सजा पाने के समान अधिकारी होते।

डॉ. आईदानसिंह भाटी ने जैसलमेर रियासत में प्रचलित घटना का जिक्र करते लिखा- 'वहां का दीवान था मोहता नथमल। जैसलमेर में दीवान नथमल की हवेली बहुत प्रसिद्ध है। उसने अपने पुत्र के 'पालने के लिए' पेड़ काटने का आदेश दिया। दीवान के कारिंदे भादरिया के ओरण से पेड़ काटकर ले आये। वे उस ओरण से पेड़ काटकर ले गये जिस ओरण से राजा तक पेड़ नहीं काट सकता था। प्रजा की पुकार राजा तक पहुंची। राजा ने दीवान को इस कृत्य के लिए फटकारा और देवी के देवालय में सोने का पेड़ चढ़ाने का आदेश दिया। नथमल ने देवालय पहुंच माफी मांगी और देवालय में सोने का पेड़ चढ़ाया।'

नथमल का एक गीत मैंने मेवाड़ में बचपन में सुना था। सच है हर चीज लिखित नहीं होती। लिखित संविधान होता है जिसकी अवहेलना होती भी देखी गई पर लोकसम्मत अलिखित नियम कायदे संविधान से भी ऊपर होते हैं।

डॉ. भाटी ने उधर प्रचलित एक गीत का भी उल्लेख किया जिसमें नथमल स्वयं नायक बन पेड़ काट रहा है- 'घात्यौ नथमल बोरड़ी रै घाव / बोरड़की करळाई नैनै वाळ ज्यौं / बोरड़की करळाई कायर मोर ज्यौं।' बोरड़ी कुल्हाड़ी का वार करने पर नन्हें बालक जैसा विलाप और मोर की तरह कारूणिक स्वर में वेदनाजनित अश्रुपात करने लगी। ऐसी स्थिति में बोरड़ी नथमल को श्राप देती कहती है- 'तेरी घरवाली मर जाय। पालने में झूला झूलता बच्चा मर जाय। ठाण पर बैठा ऊंट और सांकल से पांव बंधी भैंस मर जाय'- 'मरजौ नथमल थारोड़ी घरनार / पाळणियै में मरज्यौ मोभी डीकरौ / झोकड़ल्यौ में मरज्यौ भूरियौ ऊंट / पैंखड़ल्यां में मरज्यौ भूरोड़ी भैंसड़ी।'

गीत में नथमल शर्मिन्दगी महसूस कर अपने किये पर पछताता है और प्रायश्चित स्वरूप मुंह में घास डाल माफीनामा ले देवालय पहुंच जुर्म कबूल कर देवी से क्षमायाचना करते सोने का पेड़ चढ़ाता है। ऐसा करते ही देवीकृपा से घर में सबकुछ अनुकूल होता सुखशांति छा जाती है।

जैसलमेर के सांवता गांव स्थित देगरायमाता के मन्दिर का ओरण 600 वर्ष से अधिक प्राचीन है जिसे वहां के महारावल वैरसी ने संकल्पबद्ध सानंद पुष्कर की तीर्थयात्रा पूरी कर समर्पित किया था। यह घटना विक्रमी संवत् 1476 वैसाख शुक्ला नवमी की है। साठ हजार बीघा में फैला यह भूभाग सांवता, भोपा, रासला, अचला, भोमसर, मुलाना, कराड़ा, भीखसर आदि गांवों द्वारा रक्षित लगभग 5 हजार ऊंटों तथा 30 हजार भेड़-बकरियों का चरागाह तथा अन्य पशु-पक्षियों का आश्रय स्थल बना हुआ है।

वृक्षों में राम का वास माना गया है। जनमान्यता में बड़ में नौ लाख देवियां, नीम में नारायण, खेजड़ी में गोगा, बरगद में सती, नीम में शीतला, नीमज, गुलर में मावली, बारेड़ी में बद्रीनाथ, साज में भैरव, आम में आमज, दुर्गा, महुआ, बरगद में दंतेश्वरी तथा पीपल में पीपलाज जैसी देवियों का वास माना गया है।

उदयपुर के अशोक परिहार ने बताया कि शेषावतार लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ का प्रिय वृक्ष खेजड़ी है।

सच है जब कल्लाजी रूंड लिए शत्रुओं का संहार करते चित्तौड़ से सलूंबर के आगे पहुंचे तब खेजड़ी ने झरकर उनकी प्यास बुझाई थी। वहीं उनका प्राणांत हुआ जहां बसा रूंडेड़ा गांव उनकी यादगार लिये है।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 सितंबर2023

सम्पादकीय

प्रदूषण का फैलता जहर

सब ओर जिधर देखो उधर ही प्रदूषण का माहौल है। प्रदूषण कहां नहीं है? पंचतत्व भी प्रदूषण से भरे पड़े हैं। पृथ्वी पर तो प्रदूषण है ही पर आकाश भी कहां स्वच्छ है? अग्नि भी शुद्ध नहीं है।

वायु में तो इतना प्रदूषण है कि श्वांस लेना तक दूभर हो गया है। बड़े शहरों की स्थिति तो दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है। वनस्पति भी प्रदूषण से अछूती नहीं रही है। जब हवा, पानी, खाद सब अशुद्ध है तो हमारा वनस्पति जगत कैसे शुद्ध हो सकता है।

इन सबके मूल में मनुष्य है। अपने असीम स्वार्थ के रहते उसने मनुष्यता के सारे मापदण्ड को तिलांजलि दे मानवता की सारी हदें पार कर दी हैं। इसके लिए ठीक ही लिखा गया –

रद्दी तो अखबार की भी काम की।
आदमी रद्दी हुआ किस काम का।।

जो तीर्थस्थल, जो नदियां, जो बागबगीचे, पर्यटनस्थल अति पवित्र समझे जाते थे वे अब अकल्पनीय अशुद्धि लिए हैं। पर्यावरण का ऐसा प्रदूषण पहले कभी नहीं सुना गया। गंगा जैसी नदियां जो परम पवित्र मोक्षदायिनी समझी जाती थीं, अब उतनी ही प्रदूषित बनी हुई हैं। बड़ा आश्चर्य है कि उसे पवित्र, प्रदूषण मुक्त करने के लिए अकूत धन लगाकर विशेष परियोजना चलाई जा रही है।

यह लिखते समय एक किस्सा याद आ रहा है। काशी के गंगा घाट पर सुबह-ही-सुबह महात्मा कबीरदास पहुंचे। उन्होंने देखा दुर्गादत्त नामक एक माना हुआ पंडित गंगाजी में डूबकी लगा ज्योंहीं बाहर निकला कि किसी अछूत से छू गया। इस पर वह पुन: डूबकी लगाने पहुंचा और ज्योंही बाहर आया कि एक अन्य अछूत से उसका स्पर्श हो गया तो वह पुन: पवित्र होने डूबकी लगाने गया।

ऐसा तीन बार करते दुर्गादत्त को जब देखा तो कबीरजी ने उससे पूछा कि क्या गंगाजी में नहाने से तू पवित्र हो गया? क्या गंगाजी का पानी इतना शुद्ध है और वह अछूत इतना अशुद्ध है? अरे बावले! गंगा भी तो गंदी है। उसे भी तो मछलियां प्रसव के दौरान गंदा कर देती हैं। यह सुन दुर्गादत्त का माथा ठनका। वह विचार करने लगा कि जब गंगा मैया भी अशुद्ध है तो फिर शुद्ध कौन है? किसका पानी शुद्ध है। इसी चिंतना में वह बेचैन हो गया। उन्हीं दिनों उसने सुना कि राजरानी मीरांबाई का काशी में पदार्पण हुआ है। दुर्गादत्त के लिए यह अच्छा अवसर था। वह मीरांबाई के दर्शन भी कर लेगा और अपनी शंका का समाधान भी निकाल लेगा।

यह सोच वह मीरांबाई से मिलने पहुंचा। मीरांबाई से पूछने पर उसे उत्तर मिला कि सर्वश्रेष्ठ जल नारियल का होता है जो न तो धरती का है और न आकाश का। यह इन दोनों के बीच का फल है इसीलिए उसे अधरगंगा कहते हैं। यह सुन पं. दुर्गादत्त को समाधान मिल गया। उसने कबीरदासजी से मीरांबाई का यह कथन निवदेन किया तब कबीर ने भी अपने मठ में बतौर मेहमान मीरांबाई को आमंत्रित कर उनका बहुमान सम्मान किया।

एक हजार एक सौ मीटर लम्बी 21 किलोग्राम की पगड़ी

- तुलसीराम कंडारा -

जब से मानव जाति ने तन ढकने एवं अन्य जरूरतों की पूर्ति के लिए वस्त्रों का आविष्कार किया तभी से पगड़ी ने भी अपना मान-सम्मान पाया। खासतौर से मांगलिक कार्यों सहित परिवार के सदस्यों के पंचतत्व में विलीन होने तथा अन्य अवसरों पर पगड़ी आन-बान और शान की प्रतीक रही है।

राजस्थान के विभिन्न इलाकों, जातियों, समुदायों और अवसर विशेष के आधार पर अनगिनत प्रकार की पगड़ियां प्रचलित हैं। इनमें रंग, आकार, वस्त्र व डिजाइन आदि की विभिन्नता होती है जो इन्हें अपनी विशिष्टताओं के कारण वर्ग विशेष की पहचान बनाती है। राजस्थान में आप सिर की पगड़ी के आधार पर जाति, वर्ग, स्थान और अवसर की पहचान कर सकते हैं।

उदयपुर के दौलत सेन ने अपने पिता के हुनर को आगे बढ़ाते हुए डेढ़ इंच से लेकर 1111 मीटर लम्बे कपड़े को विशाल पगड़ी का रूप दिया है जिसका वजन 21 किलोग्राम है। इस पगड़ी की खासियत यह है कि इसका नाम कसूमल भोपालशाही पाग दिया गया है जिसमें विशाल लटकन, चन्द्रमा, इमली, पछेड़ी व तुर्रा कलंगी आकर्षक रूप से सजाई गई है।

सेन बताते हैं कि वे अभी तक फतेहशाही, भोपालशाही, अमरशाही, शिवाजी पगड़ी, सरदारी पगड़ी, पठानी, महाराष्ट्र की शाही पगड़ी, फेंटे व वर्तमान महाराणा अरविन्दसिंह मेवाड़ के लिए शाही पगड़ी बना चुके हैं। वे साफे बनाने में भी सिद्धहस्त हैं। वे जोधपुरी, जयपुरी, मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती एवं गुजराती साफे को भी सुन्दर एवं विभन्न रंगों के आकार देते हैं।

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास
352, श्रीकृष्णपुरा की बजाय
फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास,
मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

अपना देश अपनी संस्कृति

मूर्खों के विभिन्न प्रकार

लोगों की सोच और समझ को भी दाद देनी होगी। कैसे-कैसे लोग हैं जो कुछ-न-कुछ ऐसा कार्य करते रहते हैं जो अन्यों को सीख दे और जीवन में सार्थक सक्रियता दे। ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो कामचोर बैठे ठाले कुछ-न-कुछ बेमतलब का खीलाफांदा करते स्वयं तो परेशान होते या न भी होते हों पर उनसे अन्य तो परेशान होते ही हैं।

कौन ऐसा प्राणी है जिसने अपने जीवन में कोई मूर्खता नहीं की हो। दूसरी ओर कौन ऐसा प्राणी है जो मूर्ख बनना नहीं चाहेगा। वर्ष में एकाध बार ही सही, मूर्ख बनकर हर व्यक्ति प्रसन्नता का अनुभव करता है। इसके लिए त्यौहार भी होली का चयन किया गया। कोई मूर्ख बनाये या नहीं भी बनाये तो व्यक्ति स्वयं ही अपने को मूर्ख बनाकर अति संतुष्ट होता भी देखा गया है।

ऐसे आयोजन भी होने लग गये हैं जब कुछ लोग मिलकर किसी विशिष्ट व्यक्ति को अपने बीच सम्मानित कर मूर्ख-महामूर्ख बनने का खिताब देते हैं। मूर्खों के लिए जो सवारी खोजी गई है वह भी गधा नामक प्राणी है। होली पर ऐसे कई मनचले गधे की सवारी करते-कराते देखने को सहज आसानी से मिल जाते हैं।

गधे की बात चल पड़ी तो यही ऐसा प्राणी है जो अपने से अधिक हैसियत का भार ढोने में राजी रहता है। मूर्ख व्यक्ति को आम बोलचाल में गधे का सम्बोधन देने की जैसे रीति ही चली आ रही है। भाई लोगों ने तो गधे पर पुराण भी लिख दिया है।

वैसे किसी को सजा देने के लिए गधे की सवारी कराकर सार्वजनिक रूप में जुलूस निकाला जाता है। अधिक दण्ड देने के लिए उसका मुंह काला कर दिया जाता है और सिर के पहनावे में नीम की उल्टी लटकती डालियां लगा दी जाती हैं। फटे-पुराने कपड़े पहनाकर कभी-कभी गधे पर उल्टा बिठा दिया जाता है। शासक की ओर से सजा देने पर भी ऐसी ही दुर्गति की जाती है।

उदयपुर में महाराणा द्वारा दंडित करने पर अपराधी को समग्र रूप से काले कपड़े पहनाये जाते, काला मुंह कर कालिख पोत दी जाती, सिर के बाल भदर कर दिये जाते, दाढ़ी-मूंछ सफाचट कर गधे पर उल्टी सवारी करा सदैव के लिए राज्य से बाहर कर दिया जाता था। यह सजा देने के लिए उसे शहरकोट से लगी दण्डपोल से बाहर का रास्ता दिखा दिया। ऐसी पोलों का अस्तित्व सूरजपोल, हाथीपोल, चांदपोल के रूप में आज भी बना हुआ है।

होली पर बीकानेर में जगह-जगह ख्यालों के प्रदर्शन आयोजित होते हैं। पहले की रंगत अलग थी। उन ख्यालों में रम्मत नामक ख्यालों का अध्ययन करने होली से पूर्व सन् 1964 में मेरा वहां जाना हुआ। वहां रह रहे अध्ययन खोजी उदय नागोरीजी से दो-चार बार मिलना हुआ। उनसे हुई वार्ता-प्रसंग में उन्होंने एक हस्तलिखित रूक्का बताया जिसमें 84 प्रकार के मूर्ख बताये गये थे।

इस पानड़े के अन्त में संवत् 1764 आसाढ़ सुदी 2 की मिति तथा पं. मूलकचन्द लिखित श्री जैसलमेर दुर्गे लिखा हुआ था। इसकी भाषा स्थानीय बोली लिये थी। पाठकों की जानकारी के लिए यहां उसका हिन्दीकरण प्रस्तुत है। इन मूर्ख प्रकारों के अन्त में 'वह मूर्ख' लिखा गया था। ये प्रकार हैं-

(1)बच्चे की संगति करे (2) बिना काम दूसरे के घर जाये (3) पिता को नीच कहे (4) बिना मतलब बहसबाजी करे (5) बिना काम पाप-कर्म करे (6) दान देने वाले को मना करे (7) अकारण झगड़ा करे (8) गीत-कथा कहते समय व्यर्थ का प्रपंच करे (9) बड़ों के आगे आए (10) नीच की संगत करे (11) बड़ों के सामने खुले मुंह बात करे (12) स्त्री से फालतू झगड़े (13) राजा जिसे सम्मान दे उसके सम्मुख बोले (14) मैदान में बैठ लड्डू पीछे रखे (15) दरबार में झूठ बोले (16) रूपवान स्त्री देख मन करे (17) गुरु सम्मुख बोले (18) मैदान में बैठ बात करे (19) गुरु सम्मुख पालथी मार बैठे (20) कुलटा स्त्री के घर जाये (21) सोनार से प्रीत करे (22) जानबूझ कर कुकर्म करे (23) पंडित से वाद करे (24) अपने को बीमारू बताये (25) गली बीच स्त्री से बात करे (26) राजा से प्रीति जान विश्वास करे (27) अनसुने को सुनाये (28) भयग्रस्त हो अकेला चले (29) अकेला बड़बड़ाता रहे (30) बिना जान-पहचान साथ निकले (31) बार-बार अकड़ कर बैठे (32) भोजन बीच उठे (33) कथा कहते हंसे (34) अवयस्क से प्रीत करे (35) अकड़ बैठ भोजन करे (36) सम्मुख बैठ पेशाब करे (37) निर्लज हो नीति की बात करे (38) जरूरी काम जाते हुए को रोके (39) सिर चढ़कर बैठे (40) मूंछ बिना केवल दाढ़ी का स्मरण करे (41) बिना गांव बसे (42) शगुन लेने बाद भी लौट आए (43) गाली देकर चोट पहुंचाये (44) बिना भूख भोजन करे (45) सुथार द्वारा लकड़ी घड़ते समय आगे खड़ा रहे (46) पासे खेलते वाद करे (47) तैरना नहीं आते पानी में जाये (48) जीमते समय गुस्सा करे (49) जाते हुए सर्प को छेड़े (50) जड़ बैल जोते (51) बिना सवार घोड़े चढ़े (52) मुख्य सांड मारने वाला (53) झूठमूठ के पशु से सोकर निकाले (54) पंडित होने पर गर्व करे (55) दानी होने पर गर्व करे (56) रामत खेलते गुस्सा करे (57) रूठे मित्र को नहीं मनावे (58) गुरु-मित्र से वाद करे (59) निर्बल होते सबल काम करे (60) सबल काम पड़े दूर रहे (61) धर्म करते पाप पालने वाला (62) गूढ़ बात को चौड़ा करे (63) धर्मजीवी की निंदा करे (64) भोजन करते ही पानी पिये (65) रितुमती से भोग करे (66) पढ़ने बैठते समय गुरु की वंदना नहीं करे (67) झूठे बर्तने से लिखे (68) पढ़ते वक्त रूष्ट हो निकले (69) पढ़ते समय आलस करे (70) बिना चाह के सीख दे (71) याचक से प्रीत करे (72) रात को खाट खींचे (73) दीपक के अग्नि लगाये (74) दरबार में गंदा जाये (75) शिष्य और पुत्र के साथ व्यवहार में विलंब करे (76) लिखते समय बात करे (77) बहू से गुस्सा करे (78) रूपवती स्त्री ढीली लगे (79) अनावश्यक देरी करे (80) विष पान करे (81) आग लगने पर बैठा रहे (82) कुए के पास बैठ हंसीठट्ठा करे (83) दरबार में झूठी साख भरे (84) दो की बातों में दखल दे।

मूर्खों के इन प्रकारों से तो यही लगता है कि हममें से हर व्यक्ति अपने जीवनकाल में मूर्ख बनने से शायद ही बच निकले। बहुत सारी चीजें तो हमारे रात-दिन के व्यवहार में घटती रहती हैं और हमारे बड़ेरे भी इनसे दूर रहने की शिक्षा देते पाये जाते हैं। यदि हम इनका ध्यान रखें तो कदम-कदम पर मूर्ख बनने से बच सकते हैं। वर्तमान का जीवन परिवेश कई दृष्टियों से बदलाव लिये है। संवत् 1764 में जो चीजें अकरणीय थीं वे आज भी अकरणीय बनी हुई हैं। देखना यह है कि तब 84 प्रकार के मूर्ख थे, अब उस संख्या में वृद्धि तो नहीं हुई है।

- म. भा.

आदिवासी विकास के सरोकार

-प्रो. (डॉ.) कहानी भानावत-

आदिवासियों के संबंध में उन विद्वानों ने अधिक लिखा है जो आदिवासी जीवनधारा से पूरे आत्मीयता से नहीं जुड़ पाये और जो आदिवासियों के लगातार सम्पर्क में भी नहीं रहे। इसका एक कारण यह भी रहा कि जिसने जो भी लिखा उसमें अपना निजी मंतव्य ही अधिक स्थापित करने की चेष्टा की। आदिवासी स्वयं की उसके पीछे क्या धारणा रही, इसे जानने की चेष्टा भी अधिक नहीं की। यह भी एक पक्ष रहा कि आदिवासियों को हमने बराबरी का दर्जा नहीं दिया और न ही यह सोचा कि कई दृष्टियों से वे हमारे से अधिक सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए हैं और अब भी उनमें तथाकथित नव संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है। वे अपने परंपरागत संस्कारों, जीवन यापन के दृष्टिकोणों, सामूहिकता के स्नेहशील व्यवहारों तथा समता समाज के दायित्वों के प्रति एक दूसरे के सुख-दुख के सहभागी बने हुए हैं।

उदाहरण के लिए आदिवासियों के उद्भव के बारे में ही विद्वानों ने जिस तरह की जितनी स्थापनाएं दी हैं वे ही चकित करने वाली हैं किंतु जब आदिवासियों से स्वयं के संबंध में जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा करें तो कई चौंकाने वाले तथ्य हाथ लगते हैं। ऐसा ही एक तथ्य आदिवासियों के बीच निरंतर भ्रमण करते, उनके देव-देवरों में प्रतिनिधि बने सेवक-पुजारी-भोपे के शरीर में अवतरित होते देवताओं से पूछताछ की गई तो जो तथ्य हाथ लगे वे चौंकाने वाले आश्चर्यजनक भले ही लगते हों किंतु उनका आधार काल्पनिक नहीं होकर आज भी यथार्थ के ठोस नजदीक हुआ लगता है।

लगभग पांच दशाब्दी पूर्व अपने भ्रमण के दौरान आदिवासियों से रू-ब-रू होकर डॉ. महेन्द्र भानावत ने आदिवासी उद्भव की जो घटना-कथा सुनी उसका उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं- आदिवासी उद्भव कथा के अनुसार आबू के अग्निकुंड में चव्हाण वंश उपजा। इस वंश में एक नरु राजा हुआ। एक बार विवाह की खुशी में वह एक कलाली के घर में घुस गया और खूब छककर दारू पी। कुछ समय बाद जब उसे तेज भूख लगी तो पाड़ा काट खाया। ये दोनों ही कार्य उसकी प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकूल नहीं थे। सुबह जब नरु का मद उतरा और सरदारों की नजर पाड़े की पूंछ पर पड़ी तो बात फैल गई कि नरु राजा तो आधी में वास गया था, पाड़ा खाने से वटल गया। लोगों में एक कान से दूसरे कान में बात फूटी कि नरु राजा आधी (अर्द्धरार्ति) में वासी (वासने-बू देने वाला) हो गया। इससे लोग उसे 'आधी वासी' कहने लग गये। इसी आधीवासी से कालान्तर में 'आदिवासी' नाम चल पड़ा।

इस नरु ने 108 विवाह किये पर संतान एक भी नहीं हुई तब बांसवाड़ा जिले के धारणा गांव की इमली पर एक सौ आठ पालने बांधे गए। इस आमली (इमली) वृक्ष के नीचे लोकदेवता आमल्या बावसी का स्थान था। संतान नहीं होने की स्थिति में देवता को मनौती बोली गई और पालने बंधवाये गये फलस्वरूप नरु के 108 बालक हुए। आगे जाकर आदिवासियों की एक सौ आठ खांपें अथवा गौतैं चलीं। संतान नहीं होने की स्थिति में लोकदेवी-देवता के थानक (देवरे) पर आज भी पालना बांधा जाता है जिससे देवता प्रसन्न होकर नि:संतानों को संतान देते हैं। बांसवाड़ा में ये आदिवासी सब ओर फैल गए। पूरे राजस्थान में यदि आदिवासियों की गणना की जाय तो आज भी सर्वाधिक आदिवासी बांसवाड़ा जिले में मिलेंगे।

नरु से निनामा निकले। बांसवाड़ा जिले में यदि आदिवासियों की सभी खांपों का अध्ययन किया जाय तो सर्वाधिक संख्या निनामा आदिवासियों की मिलेंगी। कई गांव ऐसे मिलेंगे जिनमें निनामा आदिवासियों का बाहुल्य पाया जाता है।

आज भले ही आदिवासियों में शहरी प्रभाव और नाना प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के चलते अन्यों के साथ मिलने-जुलने तथा शिक्षा के विविध आयामों के कारण उनमें परिवर्तन की स्पर्धा मिलती हो किंतु गहराई से खोजबीन करने पर उनका असल मन आज भी अपने जीवनानुभव के प्रभावी सरोकारों से ही प्रतिबद्ध लगता है। बहुत सारे सरोकार तो उनमें उनकी दृष्टि से ठीक ही लगते हैं किंतु उन सरोकारों को ठीक से समझने के अभाव में हमने उनको गलत समझ लिया और अपनी मनमर्जी का अर्थ उन पर थोप दिया। उदाहरण के लिए उनमें प्रचलित सागड़ी प्रथा को ही लिया जा सकता है।

सागड़ी प्रथा की परंपरा हर काल और हर युग में रही है। इसका अर्थ दास अथवा दलित याकि पतित जन से है किंतु जिसके पास जीवनयापन का कोई साधन ही नहीं है वह जीवित रहने के लिए यदि किसी समर्थ व्यक्ति के वहां अपनी सेवा देता है, काम करता है तो लोगों की दृष्टि में वह शोषित तो है ही किंतु उसके पास जब किसी प्रकार का जीवनयापन का आधार नहीं है तो वह अन्यर्त काम करके भी संतुष्ट रहेगा किंतु यदि वह जिसके पास रह रहा है, वह यदि सद्भावी या स्नेही व्यवहार का नहीं होगा तो उसके साथ दमनकारी हैसियत भी दिखायेगा ही।

ऐसी प्रथा भारत के विभिन्न प्रांतों में, विभिन्न नामों से रही है। उदाहरण के लिए आन्ध्र में वैत्ती नाम से, उड़ीसा में गोथी नाम से, मैसूर में जीथा नाम से और मध्यप्रदेश में नौकरीनामा से इसका प्रभाव रहा है। उदयपुर क्षेर्त का डूंगरपुर तो इसका केन्द्र ही बन गया था। इधर यह प्रथा सागड़ी से अधिक हागड़ी नाम से जानी गई।

ऐसी ही आदिवासियों में प्रचलित मौताणा नामक प्रथा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि आदिवासियों के जीवन का अधिकांश परिवेश अलिखित है। परंपरानिष्ठ है। आस्थामूलक है और एक-दूसरे का विश्वासी है इसलिए उनमें जो चीजें, जीवन-व्यवहार से जुडे जो सरोकार और धर्मनिष्ठ अनुशासन को अभिव्यक्त करते जो सामाजिक संदर्भों के सोपान हैं वे किसी लिखित कानून से नहीं चलते हैं। इसीलिए ऐसे समाजों ने अपने-अपने ढंग से जीवनयापन के तौरतरीके और उनमें निहित समस्याओं के हल निकाले हैं। समाज-विज्ञानियों की दृष्टि में ऐसे जितने भी प्राचीन समुदाय हैं वे अपनी परंपराओं से चलते रहते हैं। वहां व्यक्ति का प्राधान्य नहीं होकर समूह का प्राधान्य याकि सामूहिकता का आधार प्रमुखता लिए होता है।

प्रसिद्ध समाजविज्ञानी प्रो. ब्रजराज चौहान से ली गई डॉ. महेन्द्र भानावत की मौताणा संबंधी भेंट वार्ता का उल्लेख यहां समीचीन जान पड़ता है। मौताणा के संबंध में डॉ. भानावत ने जब प्रो. चौहान से उनके विचार जानने को कहा तो उनका उत्तर था-

मौताणा आधुनिक हिसाब से क्राईम है। आदिवासियों ने जिसे सिविल माना, हमने उसे क्राईम मान लिया। सिविल रूप में वह समस्या है, क्राईम नहीं। जो हानि हुई है, क्षतिपूर्ति द्वारा वह संभव है। कानून की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। मौताणा में समझौता है। जिस किसी गलती की क्षतिपूर्ति संभव हो उस समाज को पिछडा कैसे कहेंगे? वह तो अधिक विकसित समाज है।

प्रश्न - लेकिन अब न तो वह समूह रहा और न वह समाज ही?

उत्तर- यही तो चक्कर है। जो सामूहिक भोज होते थे, उनमें सबकी भागीदारी रहती थी। अब वह ठेके पर है। इससे सामूहिकता की भावना समाप्त हो गई। मुख्य समस्या ही यह है कि लोग व्यक्तिगत हित को आगे रखते हैं। जो आज भी सामूहिकता में जी रहे हैं, उन्हें सिखाने की बजाय हम उनसे सीख भी सकते हैं।

प्रश्न - तब समूह की कलाधार्मिता कैसे संरक्षित रहे?

उत्तर- कलाधर्मिता के जो रूप हैं, हम उनमें हिस्सा लें। उन्हें मान्यता दें। उनके लिए सम्मानजनक आयोजन कर उनके प्रदर्शनों की सराहना करें। उनकी प्रतियोगिताएं आयोजित करें। उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के साथ उन्हें प्रतिष्ठित एवं पुरस्कृत करें। उनमें प्रचलित कहानी-किस्सों, गाथा- आख्यानों को लिपिबद्ध करें। उनके महत्व को समझाएं।

प्रश्न - और क्या करें?

उत्तर- उन्हीं में से ऐसे लोग तैयार करें जो सशक्त होकर अपनी बात स्वयं लिखें। अपनी समस्या स्वयं उजागर करें। आज हमें जा-जाकर पूछना पड़ता है। वे लिखेंगे, कहेंगे तो उसका अधिक वजन होगा। ऐसे प्रयोग होने चाहियें। सरकार प्रयोगशाला नहीं बना सकती। जो ऐसा काम कर रहे हैं, सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिये। इससे उनका आत्मविश्वास जाग्रत होगा।

प्रश्न - क्या इससे आंचलिकता की पैठ बनी रह सकेगी?

उत्तर- आंचलिकता बनी रहे, उसके लिए कलाकार अपनी कला को विकसित करें। वे ही उसके विशेषज्ञ बनें। विशेषज्ञ अन्य भी होंगे तो होंगे। रामायण-महाभारत के व्यापक टीवी प्रसारण को हम क्या कहेंगे। वह रूपांतरण था। उसमें कोई नुकसान हुआ हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसे हम बंद भी नहीं कर सकते। कुछ कलाकार होते हैं जो अपने से परे अच्छा काम करते हैं। ध्यान यह रखें कि अधकचरे लोग ऐसा न करें।

प्रश्न - सरकार की भागीदारी कहां तक हो?

उत्तर- सरकार यह सब न करे। अब तक किया उसके परिणाम सामने हैं। सरकार स्वयं प्रयोगशाला बनने की बजाय विशेषज्ञों, विशेषज्ञ संस्थाओं पर छोड दे। असली कार्यकर्ता कमजोर न पडें। ठेकेदार पैदा न हों। सहकारिता तंर्त सक्षम बने। सबकुछ होने पर भी समस्या रहेगी तो उसके लिए झगड़ना पडेगा।

भारत में निवास कर रहे आदिवासी सब ओर बसे हुए हैं। सबकी जातिगत पहचान जुदा-जुदा है। सबके रहन-सहन के तौरतरीके भी अलग-अलग हैं। अपने समाज, संस्कार, कबीले तथा धर्म-कर्म में भी वे अपनी-अपनी विशिष्ट पहचान देते पाये जाते हैं। प्रकृति के सहारे जीवनयापन करने के कारण प्रकृति की शक्ति और उसी के संबंल में उनका दृढ विश्वास प्रबल बना हुआ है।

वे आज भी प्राकृतिक संसाधनों के भरोसे अपना भरोसा बनाये हुए हैं। उनकी जीवनचर्या में आदिमपन की गंध, उसके लक्षण, उसके विश्वास, उसकी प्रकृति तथा देह-मन से जुडे क्रियाकलाप दिखाई देते हैं। उसी के ठेठपन में उनके ठाठ, उत्सव, आनंद, मनोविनोद तथा निराशा, अवसाद, विसंगति एवं मौन एकाकी भाव सन्निहित हुए मिलते हैं। राजस्थान के आदिवासी कम अजूबे नहीं नहीं है। उनमें राजस्थान की शक्ति, भक्ति तथा हल्दी, चंदन की सुवास उन्हें कई दृष्टियों से अन्य आदिवासी समुदाय से विलग करती है।

राजस्थान का मेवाड़ अंचल इन आदिवासियों का घना बसेरा लिए है। यहां आदिवासी भीलों का निवास है जिन्होंने महाराणा प्रताप के साथ अपना युद्ध-कौशल दिखाकर हल्दीघाटी रणक्षेत्र में मुगल सैनिकों को चकमा दिया था। भीलों के साथ मीणों ने भी अपना जबरा पराक्रम दिखाया था।

मेवाड़ से लगे वागड़ अंचल में कथौड़ी वनजीवी निवास करते हैं जिनका आगमन महाराष्ट्र से हुआ। कोटा की ओर का क्षेत्र हाड़ौती अंचल के नाम से जाना जाता है। इस अंचल में सहरिया आदिवासी निवास करते हैं। वे अपनी स्वांग कला तथा चित्रांकन परंपरा में अन्यों से कहीं अधिक श्रेष्ठता लिए हैं।

आबू के पास का क्षेत्र गरासिया जनजाति का प्राचीन इतिहास लिए वैभवपूर्ण दरसाव का बहादुरी भरा दस्तावेजीकरण ही प्रस्तुत करता है। उनका रंगीन परिधान तथा नाचगान की जीवनदायिनी परंपरा उन्हें मनबहलाव की कई संस्कृतियों की सन्निधि का आत्मसुख देती है।

आदिवासी जनजातीय विकास के संदर्भ में 8 अक्टूबर 1972 को भारतीय लोककला मंडल में एक संगोष्ठी हुई जिसमें लोककलाओं के विकास को लेकर विशेष चर्चा की गई थी। उस संगोष्ठी में डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा जो प्रश्न उठाये गये वे थे-

आज की बदलती हुई जीवन व्यवस्था में विविध कलाओं का क्या रूप हो?

क्या यह कलाएं अपने पारंपरिक परिवेश में ही जीवित रह सकती हैं?

और यदि इनमें परिवर्तन-परिवर्धन हो तो वह किस सीमा तक हो?

यह परिवर्तन-परिवर्धन कलाकार स्वयं करें या कोई अन्य दृष्टिवान कला-पुरुष?

क्या यह परिवर्तन ऐसा नहीं लगेगा जैसा थोपा हुआ हो?

क्या दर्शक और प्रदर्शक का एक-मन उसे आंख मींच कर स्वीकार कर लेगा?

मेरी समझ में ये प्रश्न आदिवासियों की जीवनधारा के समक्ष आज भी प्रासंगिक लगते हैं।

पुरूषोत्तम पल्लव को 'आगीवाण' सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर द्वारा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए उदयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार पुरूषोत्तम पल्लव को आगीवाण सम्मान से सम्मानित किया गया है। पल्लव को यह सम्मान अकादमी की ओर से बीकानेर स्थित वेटेनरी विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित वार्षिक पुरस्कार और सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि शिक्षामंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने प्रदान किया। सम्मान के तहत प्रमाण पत्र एवं 31 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

रामचन्द्र नन्दवाना स्मृति सम्मान अवधेश प्रधान को

उदयपुर (ह. सं.)। संभावना संस्थान द्वारा वर्ष 2023 के लिए स्वतन्त्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना स्मृति सम्मान बनारस के प्रसिद्ध आलोचक अवधेश प्रधान को उनकी चर्चित कृति 'सीता की खोज' के लिए प्रदान किया जाएगा। अध्यक्ष डॉ. के. सी. शर्मा ने बताया कि जोशी की यह कृति भारतीय साहित्य की सुदीर्घ परम्परा में सीता जैसे कालजयी चरित्र का विशद अध्ययन है जिसमें संस्कृत साहित्य से लगाकर लोकसाहित्य तक व्याप्त सीता के चरित्र का सिंहावलोकन है। वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार प्रो. काशीनाथ सिंह, वरिष्ठ हिंदी कवि राजेश जोशी और वरिष्ठ लेखक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल की चयन समिति ने सर्वसम्मति से इस कृति को सम्मान के योग्य पाया।

संयोजक डॉ. कनक जैन ने बताया कि राष्ट्रीय महत्त्व के इस सम्मान के लिए सत्रह कृतियां प्राप्त हुई थीं। कृतियों के मूल्यांकन के आधार पर चयन समिति ने 'सीता की खोज' को श्रेष्ठतम कृति घोषित किया। सम्मान के तहत लेखक को ग्यारह हजार रुपये, शॉल और प्रशस्तिपत्र भेंट किया जाएगा।

बाजार / समाचार

प्रो. भाणावत आईक्यूएसी के डायरेक्टर बने

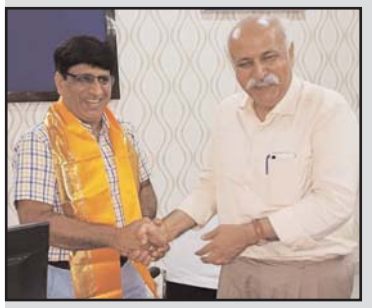

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत को आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल (आईक्यूएसी) के डायरेक्टर पद पर नियुक्त किया है। प्रो. भाणावत के अब तक 68 रिसर्च पेपर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जनरल्स में प्रकाशित हुए हैं। उनमें से 11 रिसर्च पेपर को बेस्ट पेपर अवार्ड से नवाजा गया है। 25 से ज्यादा पॉपुलर आर्टिकल भी कई हिंदी न्यूजपेपर में प्रकाशित हुए। उन्होंने कार्बन टैक्सेशन के ऊपर एक रिसर्च प्रोजेक्ट हाल ही में संपन्न किया है। प्रो. भाणावत अभी रुसा मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन भारत सरकार से प्रायोजित ब्लॉक चैन अकाउंटिंग रिसर्च प्रोजेक्ट के प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर के रूप में भी कार्य कर रहे है।

पुलिस लाइन में लगाए 154 पौधे

उदयपुर (ह. सं.)। परीक्षण तैयारी सेवाओं में राष्ट्रीय अग्रणी, आकाश बायजूस ने 2023 में अपने उत्कृष्ट परिणामों का जश्न मनाते हुए उदयपुर में वृक्षारोपण अभियान चलाया। संस्थान ने उदयपुर की रिजर्व पुलिस लाइन में 154 पौधे लगाए, क्योंकि उदयपुर शाखा के 154 छात्रों ने नीट, जेईई (मेन) और जेईई एडवांस्ड 2023 के लिए अर्हता प्राप्त की है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती अंजना सुखवाल थीं, जिनके साथ कंपनी के अन्य अधिकारियों के साथ आकाश के वरिष्ठ शैक्षणिक सदस्य और छात्र भी मौजूद थे। वक्ताओं ने छात्रों को प्रकृति और पर्यावरण के महत्त्व की जानकारी दी।

बजाज फाइनेंस फिक्स्ड डिपॉजिट 50,000 करोड़ के पार

उदयपुर (ह. सं.)। बजाज फिनसर्व ग्रुप की कंपनी बजाज फाइनेंस लि. की फिक्स्ड डिपॉजिट बुक ने 50,000 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है। बजाज फाइनेंस में 5 लाख जमाकर्ता हैं। हर जमाकर्ता ने 2.87 डिपॉजिट्स रखी हैं। यानी 1.4 मिलियन डिपॉजिट्स हैं। बजाज फाइनेंस को अपने लॉन्ग टर्म डेट प्रोग्राम के लिए क्रिसिल, इकरा, केयर और इंडिया रेटिंग्स से हाइएस्ट क्रेडिट रेटिंग एएए/स्टेबल, अपने शॉर्ट टर्म डेट प्रोग्राम (अल्पकालिक उधारी कार्यक्रम) के लिए क्रिसिल, इकरा और इंडिया रेटिंग्स से ए1+ रेटिंग और अपने फिक्स्ड डिपॉजिट प्रोग्राम के लिए क्रिसिल और इकरा से एएए (स्टेबल) की रेटिंग मिली है।

बजाज फाइनेंस के एग्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट - फिक्स्ड डिपॉजिट एंड इन्वेस्टमेंट, सचिन सिक्का ने कहा कि हमने अपने ग्राहकों के लिए आकर्षक ब्याज दरों पर लॉन्ग टर्म सेविंग्स समाधान पेश करने पर ध्यान केंद्रित किया है। हमारे फिक्स्ड डिपॉजिट पोर्टफोलियो की तेज ग्रोथ रही है, जो पिछले 2 सालों में दोगुनी हो गई है। यह बजाज फिनसर्व ब्रांड में ग्राहकों के भरोसे, डिजिटल रूप से फिक्स्ड डिपॉजिट की बुकिंग में आसानी और हमारी देशव्यापी उपस्थिति को दर्शाता है।

एचडीएफसी बैंक और मैरियट बॉनवॉय में करार

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने भारत के पहले को-ब्रांडेड 'मैरियट बॉनवॉय एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड' को लॉन्च करने के लिए मैरियट बॉनवॉय, मैरियट इंटरनेशनल के अवॉर्ड प्राप्त ट्रेवल प्रोग्राम के साथ करार किया है। होटल क्रेडिट कार्ड, को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड डाइनर्स क्लब पर चलेगा, जो डिस्कवर ग्लोबल नेटवर्क का हिस्सा है और इसका लक्ष्य भारत में सबसे अधिक लाभदायक और सुविधाजनक ट्रेवल कार्ड्स में से एक बनना है। मैरियट बॉनवॉय एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड दो ब्रांडों की ताकत का लाभ उठाएगा और ग्राहकों को कई सारे ट्रेवल बैनिफिट्स की एक पूरी सीरीज प्रदान करता है। इसमें मैरियट बॉनवॉय के साथ सिल्वर एलीट स्टेटस भी शामिल है, जो सबसे पहले लेट चेकआउट, एक्सक्लूसिव मेंबर रेट्स, मैरियट बॉनवॉय बोनस प्वाइंट्स और कई सारे अन्य लाभ भी प्रदान करता है।

सुश्री रंजू एलेक्स, एरिया वाइस-प्रेसिडेंट, साउथ एशिया, मैरियट इंटरनेशनल ने कहा कि जापान और दक्षिण कोरिया में सफल लॉन्च के बाद, हम भारत में अपना पहला मैरियट बॉनवॉय को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च करने के लिए उत्साहित हैं। भारतीय ट्रेवलर्स और घूमने-फिरने के शौकीन लोगों की एक नई पीढ़ी के लिए घूमने-फिरने के लिए एक नया संसार खुलेगा जो दो शक्तिशाली ब्रांडों के लाभों का कॉम्बिनेशन इसके मेंबर्स को उपलब्ध होगा।

आधुनिक सोलर मिल्कोचिल का अनावरण

उदयपुर (ह. सं.)। प्रॉम्प्ट ग्रुप ने सिरोही जिले में डेयरी उद्योग में एक अभूतपूर्व नई तकनीक आधारित दस सोलर मिल्कोचिल उपकरणों (इंस्टेंट मिल्क चिलर) का उद्घाटन किया। उल्लेखनीय है कि प्रॉम्प्ट ग्रूप डेयरी उद्योग में उपयोगी उपकरण एवं सॉफ्टवेयर समाधान प्रदान करने वाली अग्रणी कंपनी है।

प्रॉम्प्ट ग्रुप के मैनेजिंग डिरेक्टर श्रीधर मेहता ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक है, और दूध का अधिकांश उत्पादन छोटे डेयरी किसानों द्वारा किया जाता है। दूध दोहने और इसे पहली बार ठंडा करने के बीच का समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योकि यह दूध की गुणवत्ता पर गंभीर असर करता है। दूध की गुणवत्ता बनाए रखने एवं इसमें बेक्टेरिया की वृद्धि रोकने के लिए इसे जल्द से जल्द ठंडा करने की आवश्यकता होती है। प्रॉम्प्ट के सोलर मिल्कोचिल युनिट, दूध को स्त्रोत पर ही ठंडा करना संभव बनाती है, जिससे इसके खराब होने की संभावना कम होती है एवं इसकी गुणवत्ता लंबे समय तक बनी रहती है, जिससे अंतत: किसानों की आय में वृद्धि होती है। वर्ल्ड वाइड फंड इंडिया की वित्तीय सहायता से आशा महिला मिल्क प्रोड्यूसर्स कंपनी लि. के कार्यक्षेत्र में अत्याधुनिक सोलर मिल्कोचिल युनिट स्थापित किए गए हैं। आशा महिला मिल्क प्रोड्यूसर्स कंपनी के मुख्य कार्यपालक धर्मेंद्र मलिक ने कहा कि सोलर मिल्कोचिल युनिट स्थापित करने के लिए प्रॉम्प्ट ग्रुप के साथ सहयोग करके हम गौरवान्वित है। दूध की बेहतर गुणवत्ता किसानों और डेयरियों के लिए आर्थिक लाभ बढ़ाने के नए अवसर खोलती है।

डॉ. कुमार को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। सेंट्रल जोन ऑफ इंडियन आर्थोपेडिक एसोसिएशन की जयुपर में आयोजित वार्षिक कांफ्रेंस में 40 वर्ष की सराहनीय सेवाओं के लिए उदयपुर के आर्थोपेडियन डॉ. बी. एल कुमार को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। डॉ. कुमार को यह अवार्ड इंडियन आर्थोपेडिक एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. अतुल श्रीवास्तव एवं सेक्रेटरी जनरल डॉ. नवीन ठक्कर ने प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि डॉ. कुमार आरएनटी मेडिकल कॉलेज में आर्थोपेडिक विभाग के हेड ऑफ डिपार्टमेंट से सेवानिवृत्ति के बाद वर्तमान में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल उमरड़ा में सीनियर प्रोफसर और आर्थोपेडिक डिपार्टमेंट के हेड पद पर सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

फ्लिपकार्ट ने सेलर्स से किया संवाद

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने अपनी देशव्यापी पहल के तहत सेलर्स कॉन्क्लेव का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इसमें 500 से ज्यादा उद्यमियों एवं सेलर्स को अपना कारोबार बढ़ाने के लिए अवसरों की जानकारी पाने का मौका मिला। कार्यक्रम में आगामी त्योहारी सीजन को ध्यान में रखते हुए बहुप्रतीक्षित द बिग बिलियन डेज के दौरान सेलर्स की तैयारी को बेहतर बनाने के लिए फ्लिपकार्ट मार्केटप्लेस की विकास संबंधी योजनाओं, ग्राहकों की मांग और खरीदारी के ट्रेंड को लेकर सेलर्स को जानकारी दी गई। फ्लिपकार्ट के बहुप्रतीक्षित सालाना इवेंट द बिग बिलियन डेज (टीबीबीडी) के 10वें संस्करण का समय करीब आ रहा है। ऐसे में सेलर कॉन्क्लेव का उद्देश्य उन्हें जरूरी कौशल, जानकारी और टूल्स से लैस करना है, जिससे वे अपनी उद्यमिता के सफर पर तेजी से आगे बढ़ सकें।

फ्लिपकार्ट के वाइस प्रेसिडेंट एवं हेड - मार्केटप्लेटस राकेश कृष्णन ने कहा कि त्योहारी सीजन में ग्राहकों की ओर से आने वाली मांग को पूरा करने के लिएविकास संबंधी योजनाओं पर केंद्रित इस कॉन्क्लेव में टियर 2 और 3 शहरों के 500 से ज्यादा सेलर्स ने हिस्सा लिया। मार्केटिंग टूल्स एवं जानकारी देने के साथ-साथ फ्लिपकार्ट ने ई-कॉमर्स की दुनिया में अपनी उपस्थिति को मजबूती देने और कारोबार बढ़ाने के लिए सेलर्स को सशक्त करने की अपनी प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित की।

रिन्यूबाय ने 40 मिलियन डॉलर की पूंजी जुटाई

उदयपुर (ह. सं.)। रिन्यूबाय ने जापान की प्रमुख बीमा कंपनी दाईची लाइफ होल्डिंग्स इंक. से सीरीज डी फंडिंग राउंड में 40 मिलियन अमेरिकी डॉलर की पूंजी जुटाने का काम पूरा कर लिया है। यह दौर कंपनी के मौजूदा सीरीज डी फंड राउंड का हिस्सा है, जो कई अन्य प्रमुख निवेशकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा है और जल्द ही इसके पूरा होने की उम्मीद है। रिन्यूबाय की अग्रणी तकनीक का उपयोग जीवन, स्वास्थ्य और मोटर बीमा में 1,00,000 से अधिक बीमा सलाहकारों द्वारा किया जाता है,जहां वे अपने उपभोक्ताओं के लिए पारदर्शी और बिना किसी परेशानी के उत्पाद की विशेषताओं, कीमत और जारी पॉलिसीज की तुलना मौके पर ही कर सकते हैं।

रिन्यूबाय के सीईओ बालाचंदर शेखर ने कहा किकंपनी सहज डिजिटल अनुभव प्रदान करने के लिए 40 से अधिक बीमाकर्ताओं के साथ काम करती है और अब इसके 5 मिलियन से अधिक उपभोक्ता हैं। 1500 शहरों में अपनी व्यापक वितरण फ्रैंचाइजी की बदौलत रिन्यूबाय ने बाजार में मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रखी है। पहले से ही कंपनी का 70 प्रतिशत व्यापार टियर 3, 4, 5 बाजारों से आता है। साथ ही कंपनी के पास इन बाजारों के लिए स्वास्थ्य और जीवन समाधानों के लिए विशेष पैकेज भी मौजूद हैं। आर्टिवेटिक.एआई (हाल ही में अधिग्रहीत) के गहन तकनीकी एकीकरण के साथ, रिन्यूबाय ने अपनी वर्तमान पॉलिसी वितरण और सर्विसिंग क्षमताओं को काफी हद तक उन्नत और मजबूत किया है। यह देश में बीमा समाधानों को आसान बनाने के लिए अंडरराइटिंग समाधानों और दावा निपटान प्रक्रियाओं में सुधार की दिशा में लगातार काम कर रहा है।

वीआईएफटी में ग्राफिक डिजाइनिंग पर कार्यशाला

उदयपुर (ह. सं.)। आज का समय डिजिटल की मांग का युग है। इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। वीआईएफटी में युवावर्ग की मांग को देखते हुए करियर मार्गदर्शन के लिए ग्राफिक डिजाइनिंग और डिजिटल शिक्षा विषय पर एरिटा एनिमेशन के साझे में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। डिजाइनिंग एक्सपर्ट रोबिन खैतान, पवन गर्ग, डिजिटल मीडिया विशेषज्ञ देवर्षि मेहता तथा इन्दौर से डिजिटल मार्केटिंग एक्सपर्ट सर्वेश पंचोली ने नियमित अपडेशन के माध्यम से लेटेस्ट ट्रेण्ड और नवाचार को अपनाने पर जोर दिया।

संघ चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल मार्केटिंग और ग्राफिक डिजाइनिंग की स्थानीय से लेकर नेशनल और इंटरनेशनल स्तर पर मांग बढ़ गयी है। वीआईएफटी विद्यार्थियों और युवा वर्ग के करियर को सही दिशा देने के लिए समय-समय कार्यशालाओं का आयोजन करता रहता है। रोबिन खैतान ने बताया कि कुछ वर्षों पहले बड़ी कम्पनियों में ही डिजाइनर की आवश्यकता होती थी लेकिन आज छोटे से बड़े हर संस्थान में डिजाइनर की जरूरत होती है और उन्हें अच्छे पैकेज भी मिल रहे हैं। सर्वेश पंचोली ने बताया कि इस क्षेत्र में करियर बनाने के पहले डिजिटल माध्यमों को समझना होगा। इन क्षेत्रों में हो रहे अपडेट्स को अपनाना चाहिए। समय- समय पर हो रहे नवाचारों को सीख लिया जाएगा तो आय का इससे अच्छा माध्यम नहीं हो सकता है।

कटारिया को डी-लिट् की उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के 18वें दीक्षांत समारोह में असम के राज्यपाल महामहिम गुलाबचंद कटारिया को डी.लिट् की मानद उपाधि के तहत प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न से नवाजा गया गया। समारोह में शिक्षा, भूगोल, सोशल वर्क, कम्प्यूटर एंड आईटी के 12 शोधार्थियों को उनके शोध कार्य के लिए पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

राज्यपाल कटारिया ने संस्थापक जन्नूभाई को वंदन करते हुए कहा कि मैं बहुत ही सौभाग्यशाली हूं कि जिस संस्थान में मैं विद्यार्थी के रूप में आया और अध्यापन किया, आज वहां पर सम्मानित व दीक्षित हुआ हूं। डिग्रियां भविष्य के रास्ते खोलती हैं। शिक्षा के मंदिर को जितना मजबूत किया जाए, देश उतना ही मजबूत होगा।

कुलपति कर्नल प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने विद्यापीठ विवि की प्रगति के विभिन्न सोपानों की चर्चा करते हुए कटारिया का स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि कुल प्रमुख बी. एल. गुर्जर थे। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय जानी ने की। इससे पूर्व ऋत्विका एवं अकादमिक परिषद के सदस्यों द्वारा दीक्षांत प्रोसेशन निकाला गया। समारोह में भाजपा जिला अध्यक्ष रविन्द्र श्रीमाली, देहात अध्यक्ष चंद्रगुप्तसिंह चौहान, अतुल चंडालिया, राव अजातशत्रु, दीपक शर्मा, जगदीश पालीवाल, रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली , पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा, डीन पीजी प्रो. जीएम मेहता, डॉ. युवराजसिंह राठौड़, प्रो. सरोज गर्ग, प्रो. गजेन्द्र माथुर , डॉ. शैलेन्द्र मेहता, डॉ. राजन सूद, डॉ. मन्जू मांडोत, डॉ. कला मुणेत, डॉ. भवानीपालसिंह शहर के कई गणमान्यजन मौजूद थे।

डॉ. तुक्तक भानावत 'मेवाड़ गौरव सम्मान' से विभूषित

उदयपुर (ह. सं.)। मीडिया पर्सन डॉ. तुक्तक भानावत को 'मेवाड़ गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया। फस्ट इंडिया न्यूज चैनल, जयपुर द्वारा होटल रेडीशन ब्लू में 01 सितंबर 2023 को आयोजित समारोह में डॉ. तुक्तक भानावत को असम के राज्यपाल डॉ. गुलाबचंद कटारिया, राजस्थान श्रम कल्याण सलाहकार मंडल के उपाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली, उपमहापौर पारस सिंघवी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर अनंत कुमार, जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल एवं पीसीसी महासचिव लालसिंह झाला, फस्ट इंडिया न्यूज चैनल के सीईओ एंड मेनेजिंग डायरेक्टर पवन अरोड़ा ने शॉल, उपरना और स्मृति चिन्ह भेंट कर 'मेवाड़ गौरव सम्मान' से विभूषित किया।

असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि अच्छाई की लाईन बढ़ाने से बुराई अपनेआप खत्म हो जायेगी। उन्होंने हाड़ीरानी, पन्नाधाय और भामाशाह का जिक्र करते कहा कि मेवाड़ का योगदान पूरे विश्व में अतुलनीय है अत: इतिहास के पन्नों को भी आगे लाना चाहिये। मेवाड़ के राजा भगवान एकलिंगनाथ हैं। भगवान एकलिंगनाथ के भरोसे सत्य की लड़ाई लड़ी जाती है। सिद्धांतों की लड़ाई लड़ी जाती है। स्वाभिमान की लड़ाई लड़ी जाती है। संस्कृति रक्षा की लड़ाई लड़ी जाती है। उन्होंने कहा कि हमशा पोजेटिव सोच के साथ काम करें। नेगेटिव सोच कभी नहीं रखें। आलोचना करने से कुछ नहीं होगा। अच्छे लोगों का सम्मान होगा तो बाकी के लोगों को भी अच्छा काम करने की प्रेरणा मिलेगी।

सम्मानित होने वालों में सबसे कम आयु के अर्थांक भानावत को मेवाड़ गौरव समारोह को सफल बनाने हेतु नवाजा गया।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत फस्ट इंडिया न्यूज उदयपुर के ब्यूरोचीफ डॉ. रवि शर्मा ने किया। समारोह में एस. एस. सारंगदेवोत, प्रो. विजयलक्ष्मी चौहान, रवीन्द्र श्रीमाली, फूलसिंह मीणा, चन्द्रगुप्तसिंह चौहान, डॉ. कमलेश शर्मा, प्रवेश परदेशी, डॉ. कुंजन आचार्य, डॉ. पृथ्वीराजसिंह चौहान, सरदारसिंह होड़ा, पंकज शर्मा, अशोक सिंघवी, कमल बाबेल, हिम्मतसिंह झाला, मनीष शर्मा, चचंल अग्रवाल, भरत आमेटा, नवलसिंह चूंडावत, पीयूष कच्छावा, हिम्मतसिंह चौहान, राजेन्द्र नलवाया, अजयकुमार आचार्य, अल्पेश लोढ़ा उपस्थित थे।

भाणावत कुटुम्ब में रक्षाबंधन

इस बार रक्षाबंधन का त्यौहार सामूहिक रूप में डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत के निवास पर मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित कुटुम्बजनों में डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. तुक्तक-रंजना, शब्दांक, अर्थांक भानावत। डॉ. शूरवीर-डॉ. कल्पना, सीमा, आदित्य भाणावत। सुमित्रा, डॉ. हितेश-माधुरी, डोलची कुदाल। डॉ. कहानी-जितेन्द्र, काव्या, युक्ता मेहता। मीनाक्षी, आलोक-मेघा, ताश्वी, मानवी लसोड़। अल्का, अरिष्ट तथा काव्या जारोली आदि उपस्थित थे।

कैफ भारतीय टीम में चयनित

उदयपुर (ह. सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी के 15 वर्षीय खिलाड़ी मोहम्मद कैफ को भूटान में खेली जाने वाली सैफ अंडर-16 चैंपियनशिप में भारत की अंडर-16 फुटबॉल टीम के लिए चुना गया है।

हिंदुस्तान जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने कहा कि भारत की अंडर-16 टीम में कैफ के चयन से हम बहुत खुश हैं। मैं उन्हें सैफ चैंपियनशिप के लिए शुभकामनाएं देता हूं। युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता की इस मान्यता ने हमें एक टीम के रूप में अपने देश में फुटबॉल की बेहतरी के लिए और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है।

डॉ. लुहाड़िया और डॉ. गुप्ता की पैनल डिस्कशन में भागीदारी

उदयपुर (ह. सं.)। दिल्ली में संपन्न दो दिवसीय राष्ट्रीय चेस्ट सम्मेलन पीएसीएस - 2023 में गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के सांस रोग विशेषज्ञों डॉ. अतुल लुहाड़िया एवं डॉ. अमित गुप्ता को अस्थमा रोग और स्लीप मेडिसिन पर पैनल डिस्कशन में भाग लिया। डॉ. अतुल ने बताया कि इन्हेलर द्वारा एंटी इंफ्लेमेटरी रिलीवर दवाइयां लेने से अस्थमा के लक्षणों को कम कर बीमारी को नियंत्रण में रखा जा सकता है। डॉ. अमित ने बताया कि नींद में जोर से खर्राटे आना, नींद में सांस की गति कम ज्यादा होना, दिन में अत्यधिक नींद आना, कोई भी कार्य करने में एकाग्रता का अभाव होना इत्यादि लक्षण से ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया बीमारी हो सकती है। ऐसे व्यक्ति को पॉलीसोम्नोग्राफी या स्लीप स्टडी टेस्ट करवा लेना चाहिए।

काव्य-इतिहास को दर्शाती मेवाड़ महिमा

असम के राज्यपाल महामहिम गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि आज लक्ष्मणसिंह कर्णावट को समाज सेवा से आगे बढ़ते हुए काव्य क्षेत्र में उतरकर मेवाड़ की महिमा गाते देख मन प्रसन्न हुआ। मैंने किताब नहीं पढ़ी। सिर्फ कर्णावट का नाम सुनकर यहां आया हूँ। मेवाड़ की महिमा शब्द व्यक्ति के मन में एक संस्कार पैदा करता है। मां सरस्वती की कृपा और पुस्तक पर प्रभु एकलिंगनाथजी का चित्र दर्शाते ही उनका काम पूरा हो गया।

राज्यपाल यहां जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित भव्य समारोह में लक्ष्मणसिंह कर्णावट द्वारा रचित 'मेवाड़ महिमा' पुस्तक के विमोचन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। समारोह की अध्यक्षता राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल डॉ. एस. एस. सारंगदेवोत ने की। विशिष्ट अतिथि मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़ के कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा एवं मुख्य वक्ता डॉ. प्रदीप कुमावत थे।

कटारिया ने कहा कि मेवाड़ के महाराणा स्वयं को प्रभु एकलिंगनाथजी का दीवान मानकर काम करते रहे। बप्पा रावल से लेकर महाराणा भगवतसिंह तक का इतिहास आपने अपने इन पद्यों में लिखा है। यह किताब आने वाली पीढ़ी को मेवाड़ का इतिहास बताएगी। 300 पेज की यह पुस्तक पढ़ कर लगेगा कि मेवाड़ क्या है। इस पुस्तक से पीढियां समझेगी कि मेवाड़ इतना स्वाभिमानी क्यों है एवं इसे याद रखेगी।

डॉ. सारंगदेवोत ने कहा कि स्वाध्याय के बिना इतनी अच्छी पुस्तक नहीं लिखी जा सकती। पुस्तक ने गागर में सागर भरने का काम किया है निश्चित रूप से विश्वविद्यालयों में रेफरेंस के रूप में यह पुस्तक काम आएगी। प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि 32 महाराणाओं के बारे में जानकारी दी गई है। इतिहास साहित्य की कृति है या साहित्य इतिहास की, यह कहना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में साहित्य के माध्यम से इतिहास को पढाना प्रासंगिक हो जाता है।

लेखक लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने कहा कि जब मैंने इतिहास पढ़ा तो मैं खुद हतप्रभ हो गया। दुश्मन को हराकर छह-छह माह तक कैद करना और फिर माफी मांगने पर मुक्त करके उसे वापस राजपाट सौंप देना, यह जज्बा सिर्फ मेवाड़ के महाराणाओं में ही था। मैं न तो कोई इतिहासकार हूँ और न कवि, बस भावना के अतिरेक में कलम चला बैठा।

मधु डागा ने अपने पिता की जीवन यात्रा में आए संघर्षों को बताया। लता कर्णावट ने आभार जताया जबकि संचालन आलोक पगारिया ने किया। **- मधु डागा**

उत्तरप्रदेश की 'गुलाबो सुताबो' तथा 'यमपुरी' पुतली

- मिलन यादव -

डॉ. श्याम परमार के अनुसार विक्रमादित्य काल में पुतली का औचित्य सर्वमान्य था। ''सिंहासन बत्तीसी'' में एक ऐसे सिंहासन का वर्णन है जिसमें बत्तीय पुतलियां लगी थीं। जब विक्रमादित्य उस सिंहासन पर बैठते थे तो उनमें से निकल कर एक पुतली आती थी और राजा भोज की न्यायप्रियता और कीर्ति के बारे में कहानी

सुनाकर आकाश में उड़ जाती थी। इस विवरण से यह स्पष्ट है कि भारत में बनने वाली यांत्रिक पुतलियां अनेक चमत्कारपूर्ण कार्य करने के अतिरिक्त बोल भी सकती थीं। पुतलियों द्वारा सर्वप्रथम कथा से प्रेषण का प्रमाण यहीं से प्राप्त होता है। इससे विदित होता है कि इन पुतलियों का प्रयोग खेल या मनोरंजन के अतिरिक्त मंच पर नाट्यकथा को प्रस्तुत करने के लिए पात्रों के रूप में भी होता था।

उत्तरप्रदेश में एक विशेष प्रकार की कठपुतली प्रचलित थी, जिसे 'दस्ताना पुतली' कह सकते हैं। यह पुतली हाथों में दस्ताने की तरह पहनकर नचाई जाती थी और संचालक उनके रोचक एवं हास्यपूर्ण सम्वाद स्वयं बोलता था। गुलाबो सुताबो का खेल लखनऊ, कानपुर, रायबरेली, सीतापुर, हरदोई और फैजाबाद आदि जिलों में दिखाया जाता था। गुलाबो सुताबो के लिए कोई विशेष कथा नहीं है बल्कि इनके झगड़े सौतिया डाह, मारपीट ही इनकी दिनचर्या के रूप में गाकर कहे जाते थे।

'गुलाबो सुताबो' कपड़े व लकड़ी से बनाई जाती थी। ठोस लकड़ी को तराश कर चेहरा बनाया जाता तथा दो खोखली लकड़ियों से हाथ बनाये जाते। चूंकि यह पुतलीकला उत्तरप्रदेश में ही जन्मी है अत: शृंगार एवं पहनावा भी यहीं के अनुसार होता था। मुख्यत: घाघरा, चुन्नी, कुर्ती ही इनके वस्त्र होते थे। पारस्परिक सम्बन्ध में दोनों सौतें हैं। इनके हाथों में घुंघरू बान्धे जाते जिन्हें संचालक चलाते समय अपनी उंगलियों से बजाते थे।

अकबर के काल में आरम्भ हुई और वाजिद अली शाह के अवध में सिमट कर रह गई इस कला को कुछ विशिष्ट जाति के लोगों ने अपना लिया। अन्तिम दौर में जब अवध के नवाबों का शासन अन्तिम सांसें ले रहा था तब उन्होंने इस कला के कलाकारों को अपने यहां आश्रय दिया। धीरे-धीरे प्रोत्साहन के अभाव में अवध की अनेक लोककलाओं यथा- इन्दरसभा, स्वांग, सपेड़ा, भड़ैती, रहस आदि के साथ यह कला भी लुप्त हो गई।

उत्तरप्रदेश की संगीत नाटक अकादमी की लाइब्रेरी में इनकी एक वीडियो फिल्म है। इसमें गुलाबो सुताबो का खेल इस प्रकार है-

तो देखिये भई हमारी सुनिए कहानी गौर से
ये गुलाबो, ये सुताबो
ये रंगीली, ये छबीली
ये है ब्याहता, ये है उढ़री
स्वयं ही उत्तर देते हैं।
शादी-ब्याह हो जाता है, गौना हो जाता है।
थौना हो जाता है, निकाह हो जाता है।
ब्याहता कहते हैं, जो घर बैठ जाती है।
भाग जाती है उसे उढ़री कहते हैं।
तो देखिये -
ये उढ़री, इसका नाम गुलाबो
और ये है ब्याहता इनका नाम है सिताबो
सौत-सौत है।
एक मरद की दो मेहरियां, सौत-सौत है
ये है उढ़री, ये है ब्याहता।
तो देखिये क्या इस्तेमाल करती है-
सात बाल्टी दूध की चाय पीती है
चौदह किलो मुसम्मी खाती है
देशी घी के परांठे खाती है
और ब्याहता से कहती है कि 'खामोश रहना'
तुमको मिट्टी के तेल के परांठे खाने को मिलेंगे
रहना हो तो रहो नहीं तो मैके की तैयारी करो।
ब्याहता हाथ जोड़कर कहती है-
जबसे उढ़री आई है मेरा जीना हराम कर दिया है
मुझको मथान से मारती है, घर से भगाती है
कहती है, कमरे में रहना हो तो रहो,
नहीं तो बाहर निकल जाओ।
ब्याहता कहती है-
मेरा पति छीन लिया, घर मेरा, मकान मेरा
फिर भी मैं परेशान हूं, हलकान हूं
मेरा जेवर छीना, मेरे बच्चे भूखे हैं
ये उढ़री को लिए-लिए मेरा पति घूम रहा है
और मेरी खबर नहीं ले रहा है
मैं बहुत तंग दस्ती में हूं, कैसी ब्याहता है।
हां तो अब शुरू होती है उनकी कहानी
उनकी दास्तान सुनिए, भूरे मास्टर कहता है-
अत्तो पकाईन बरियां, बत्तो पकाईन दाल।
अत्तो की बरियां जल गई बत्तो का बुरा हाल।।
- साग लाई, पात लाई और लाई चौलईया
सास बहू छौकन बैठी, नाक लईगा कौवा।।
- आग जली बाग में, दो बैल पड़े थे

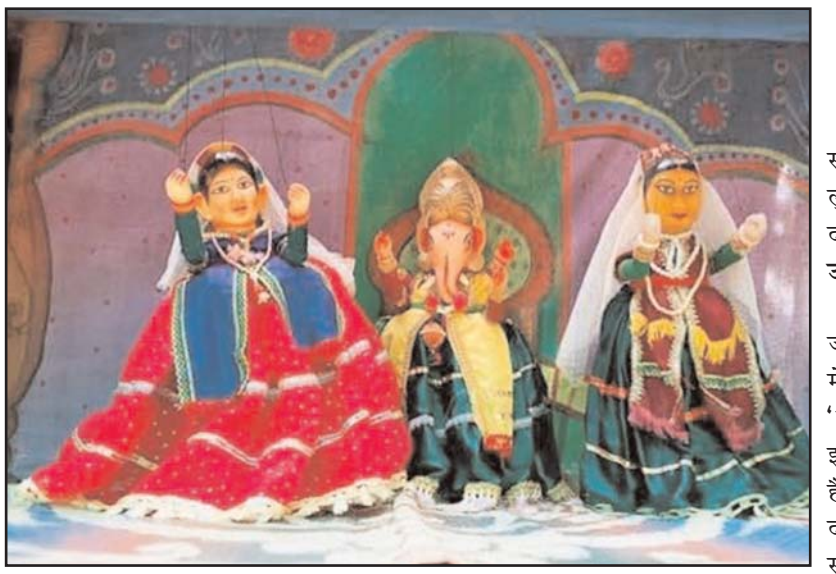

और पर्दा उठा के देखो दो शेर खड़े थे।
- खूब लड़ेगी, गुलाबो, खूब लड़ेगी
सिताबो खूब लड़ेगी, मन्नो खूब लड़ेगी
- चार बुलाए चौदह आए हर शहर की रीत।
तो चार बुलाए चौदह आए हर शहर की रीत।
बाहर वाले खाय गये, जब घर के गावै गीत
सिताबो खूब लड़ेगी, मन्नो खूब लड़ेगी
खूब लड़ेगी, गुलाबो, खूब लड़ेगी।।
आंगन में कुइयां यूं नीम निशानी
लहै-लेहे मत करो ये चीज विरानी।।
-खूब लड़ेगी सिताबो लाली बीनेगी
ये मन्नो खूब लड़ेगी, गुलाबो खूब लड़ेगी।।
-क्या बजाऊं ताली, मेरा देवर देहै गाली
गाली की बलिहारी हुक्का भरले चिलम खाली।।
-मैं तो नून तमाखू वाली, ये मन्नो खूब लड़ेगी।
- लाली बीनेगी सिताबो खूब लड़ेगी।।
- एक अचम्भा हमने देखा कुए में लागी आग
ओ पानी-पानी जल गया रे मछली खेलै फाग।
-खूब लड़ेगी सिताबो लाली बीनेगी।
ये बन्नो खूब लड़ेगी, गुलाबो खूब लड़ेगी।।
- अरे! खूब कहा, खूब कहा खूब बनि आयी।
चार कदम चल के कहां खूब न बनि आयी।
-खूब लड़ेगी सिताबो लाली बीनेगी।
ये बन्नो खूब लड़ेगी, गुलाबो खूब लड़ेगी।।
-चुटकी भर आटा चवन्नी भर घी।
खाय ले बुढ़उना, जुड़ाय मोर जी।
-खूब लड़ेगी सिताबो लाली बीनेगी।
ये बन्नो खूब लड़ेगी, गुलाबो खूब लड़ेगी।।
-लीपि आई पोति आई बैठी मन मार।
और चार चूल्हे झांकि आई आज है त्यौहार।।
-खूब लड़ेगी सिताबो लाली बीनेगी।
ये बन्नो खूब लड़ेगी, गुलाबो खूब लड़ेगी।।
- सइयां की लाडली ये मेला देखै जायं।
सिल्की चादर बेच के मथुरा के पेड़े खायं।।
-खूब लड़ेगी सिताबो लाली बीनेगी।
ये बन्नो खूब लड़ेगी, गुलाबो खूब लड़ेगी।।

इस प्रकार कलाकार की कुशल कल्पना सम्वाद को स्वत: ही आगे बढ़ा दर्शकों को लुभाने में आशातीत सफल होती है। इससे दान-दक्षिणा भी अच्छी मिल जाती है।

उत्तरप्रदेश की परम्पराशील पुतली यमपुरी :

उत्तरप्रदेश के झांसी, महोबा, उरई, जालौन, बांदा, बरैली, शाहजहांपुर आदि जिलों में कठपुतली मण्डलियां 'यमपुरी' अथवा 'बैकुण्ठ-दर्शन' नाटक का प्रदर्शन करती हैं। इस नाटिका की परम्परा लगभग 200 वर्ष पुरानी है। इस समय 'दि कर्मगत यमपुरी बैकुण्ठ-दर्शन नाटक मण्डली' बरैली, उत्तरप्रदेश की सर्वाधिक प्राचीन नाटक मण्डलियों में से है जो लगभग 60 वर्षों से प्रदेश में घूम-घूमकर अपने प्रदर्शन मेलोंठेलों में करती है।

'यमपुरी' की कथा हिन्दुओं की स्वर्ग-नर्क की कल्पना से सम्बन्धित है। भले व्यक्ति किस प्रकार स्वर्ग में सुख उठाते हैं व बुरे व्यक्ति किस प्रकार नर्क की यंत्रणाओं को झेलते हैं। किस प्रकार के लोग स्वर्ग के भागीदार होते हैं और कौन से कर्म व्यक्ति को नर्क ले जाते हैं। इस खेल में कुल 48 पुतलियों का उपयोग होता है। इस नाटिका के वस्तुविन्यास में कथा का कोई तारतम्य नहीं होता बल्कि टुकड़े-टुकड़े कथा होती है जो सब मिलकर स्वर्ग या नर्क के बारे में हिन्दुओं के प्रचलित धार्मिक विश्वास को रूपायित करती है।

इसके प्रस्तुतिकरण के लिए लगभग 20 फुट चौड़ा और 30 फुट लम्बा मंच तैयार किया जाता है। मंच लगभग दो से तीन फुट ऊंचा होता है। पुतलीचालक मंच के नीचे बैठता है। मंच के दोनों तरफ पांच-पांच फुट के रिक्त स्थान पर पुतलियां खड़ी कर दी जाती हैं। प्रत्येक पुतली का शरीर एक छड़ पर सधा रहता है जिसका सिरा या खूंटी उसकी पटरी के नीचे से निकली रहती है और पुतली के सिर, हाथ आदि धागों से बंधे रहते हैं। इन धागों के छोर पर कंट्रोल के लिए एक छल्ला लगा होता है जिसे संचालक अपनी उंगली में पहन लेता है। शरीर का प्रत्येक अंग कब्जे से जुड़ा रहता है और प्रत्येक अंग में एक धागा संचालन हेतु लगा होता है। पुतलियों को आगे-पीछे करने के लिए नीचे निकली छड़ को हाथ से संचालित किया जाता है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।